



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 27]  
No. 27]

नई दिल्ली, शनिवार, जुलाई 6, 1974 (आषाढ़ 15, 1896)  
NEW DELHI, SATURDAY, JULY 6, 1974 (ASADHA 15, 1896)

इस भाग में पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।  
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

### नोटिस NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 28 फरवरी 1973 तक प्रकाशित किए गए हैं—  
The undermentioned Gazettes of India Extraordinary were published up to the 28th February 1973:—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
------------------	--------------------------------	-----------------------------------	-----------------

—शून्य—  
—Nil—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां, प्रकाशन नियन्त्रक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी।  
मांग-पत्र नियन्त्रक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिए।

Copies of the Gazettes Extraordinary mentioned above will be supplied on indent to the Controller of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Controller within ten days of the date of issue of these Gazettes.

## विषय-सूची

भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . . . . .	पृष्ठ 725	भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . . . . .	पृष्ठ 1681
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी पत्रकारों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . . . . .	1063	भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश . . . . .	249
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . . . . .	95	भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं . . . . .	3993
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अपसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . . . . .	739	भाग III—खंड 2—एकम्ब कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस . . . . .	423
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . . . . .	—	भाग III—खंड 3—मुख्य प्रायुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं . . . . .	27
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें . . . . .	—	भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं . . . . .	319
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) . . . . .	1673	भाग IV—गैर सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस पूरक सख्या 27— 22 जून, 1974 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट . . . . . 8 जून, 1974 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु-संबंधी आंकड़े . . . . .	107 795 811

## CONTENTS

PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court . . . . .	PAGE 725	PART II—SECTION 3.—Sub. Sec. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) . . . . .	PAGE 1681
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court . . . . .	1063	PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence . . . . .	249
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence . . . . .	95	PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India . . . . .	3993
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence . . . . .	739	PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta . . . . .	423
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations . . . . .	—	PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . .	27
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills . . . . .	—	PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies . . . . .	319
PART II—SECTION 3.—Sub. Sec. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) . . . . .	1673	PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies . . . . .	107
		SUPPLEMENT No. 27 Weekly Epidemiological Reports for week ending 22nd June 1974 . . . . .	795
		Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 8th June 1974 . . . . .	811

भाग I—खण्ड 1  
PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़ कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1974

सं० 85-प्रेज/74:—राष्ट्रपति निम्न कार्मिकों को असाधारण कर्तव्यपरायणता तथा साहस के कार्यों के लिए "वायुसेना मंडल"/"एयर फोर्स मंडल" सहर्ष प्रदान करते हैं:—

1. विंग कमांडर दिलीप शंकर जोग (4608)

उड़ान (पायलट)

विंग कमांडर दिलीप शंकर जोग एक साल से भी अधिक समय से पराध्वनिक लड़ाकू विमानों की एक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे हैं। इस अवधि के दौरान, उन्होंने बहुत सारे कनिष्ठ पायलटों को सफलतापूर्वक इन वायुयानों को चलाना सिखाया। यह प्रशिक्षण बिना किसी दुर्घटना के, और निर्धारित समय में पूरा किया गया। उन्होंने इन वायुयानों के प्रशिक्षण-कार्य की देखरेख की और इन्हें उड़ाना सिखाने में मुख्य भाग लिया। इस पर भी, उन्होंने सक्रियात्मक प्रशिक्षण अभ्यासों के द्वारा स्क्वाड्रन को युद्ध के लिए तैयार रखा। उन्हें एक इंजन वाले वायुयानों को 3600 घंटे बिना दुर्घटना उड़ाने का श्रेय प्राप्त है। जिन में से 800 उड़ाने पराध्वनिक वायुयानों पर थी।

आधोपान्त, विंग कमांडर दिलीप शंकर जोग ने वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. विंग कमांडर गुरमोहन सिंह धींगड़ा (4903)

उड़ान (पायलट)

विंग कमांडर गुरमोहन सिंह धींगड़ा जनवरी, 1968 से एक सक्रियात्मक स्क्वाड्रन में सेवा कर रहे हैं। इस अवधि के दौरान, उन्होंने पायलटों को नए वायुयानों पर प्रशिक्षित करने में असाधारण रुचि और अत्यन्त उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया है। उन्होंने भूमि पर और आकाश में सभी पायलटों के स्तर को ऊंचा उठाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। उनके प्रबल और निरन्तर उत्साह और आदर्श कर्तव्यनिष्ठा से, उनके स्क्वाड्रन का सक्रियात्मक स्तर बहुत ऊंचा उठा है। उन्होंने कुल 8665 घंटे की उड़ाने भरी हैं जिन में से 2800 घंटे की उड़ाने प्रशिक्षण देने के लिए थी। और 2250 घंटे की सक्रियात्मक उड़ाने हैं। उनकी आज तक की उड़ानों के दौरान कोई दुर्घटना नहीं हुई।

आधोपान्त, विंग कमांडर गुरमोहन सिंह धींगड़ा ने भारतीय वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. स्क्वाड्रन लीडर श्रीकान्त हरिश्चन्द्र पेदनेकर (5035)  
उड़ान (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर श्रीकान्त हरिश्चन्द्र पेदनेकर अप्रैल, 1970 से छाताधारियों के प्रशिक्षण स्कूल में प्रशिक्षण उड़ानों के उड़ान कमांडर के रूप में सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कुल 7525 घंटे की उड़ाने भरी हैं जिन में से 2750 घंटे की उड़ाने प्रशिक्षण के लिए थीं। उन्हें कुछ स्क्वाड्रनों के पायलटों के सक्रियात्मक प्रशिक्षण का और कुछ थलसेना बटालियनों के लिए सामरिक दृष्टि से कुछ सामान गिराने का कार्य सौंपा गया। उन्होंने प्रशिक्षण का काम बड़े उत्साह और जोश से अपने हाथ में लिया और उसे समय से पहले ही पूरा कर दिखाया। इस अवधि के दौरान, उन्हें बिना किसी विश्राम के रात-दिन उड़ाने भरनी पड़ी। उन्होंने नये पायलटों के प्रशिक्षण-स्तर को बहुत ऊंचा उठाया है। और अपने साथियों और अधीनस्थों दोनों के लिए आदर्श प्रस्तुत किया है।

आधोपान्त स्क्वाड्रन लीडर श्रीकान्त हरिश्चन्द्र पेदनेकर ने वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

4. स्क्वाड्रन लीडर दुष्यन्त सिंह, बी० एस० एम० (5048)

उड़ान (पायलट)

स्क्वाड्रन लीडर दुष्यन्त सिंह को 1 मई, 1972 को एक सक्रियात्मक यूनिट में नियुक्त किया गया। 27 जून, 1972 को उन्हें अभ्यास "स्टार्म एक्सचेंज" का परियोजना समन्वयकर्ता नियुक्त किया गया। इनका काम यह था कि ये इस परियोजना के अधीन भारत को उधार पर दिए गए रायल एयर फोर्स कैनबरा पी० आर० 719 में बैठ कर भारतीय उपमहाद्वीप में मौसम की टोह ले। इन्होंने आज तक के सब से कम समय में, विभिन्न यूनिटों से आए कार्मिकों को एक घनिष्ठ टोली के रूप में संगठित किया और फालतू कलपुर्जों के किसी लगे बंध भरोसे के बिना बहुत से हवाई इन्डों से स्वतन्त्र उड़ाने भरी। मौसम अनुसंधान के इस नए क्षेत्र में, उन्होंने सिविलियन वैज्ञानिकों के सहयोग से, सौंपी गई सभी उड़ाने सफलता से पूरी की हालांकि उन्हें अचानक खराब मौसम का सामना करना पड़ा, उनका वायुयान नाकारा हो गया और उसके एक इंजन को बदलना पड़ा और एक का निरीक्षण करना पड़ा और उन्होंने तीन मास से भी कम अवधि में, एक ही वायुयान से 165 घंटे तक की उड़ाने भरी। उन्होंने कैनबरा वायुयान पर 2891 घंटे की दुर्घटना रहित उड़ाने भरी।

आधोपान्त स्क्वाड्रन लीडर दुष्यन्त सिंह ने वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है।

**5. स्ववाङ्मन लीडर जसजीत सिंह, वीर चक्र (5100)**  
उड़ान (पायलट)

स्ववाङ्मन लीडर जसजीत सिंह, 1961-62 में पूर्वी क्षेत्र के एक सक्रियात्मक स्ववाङ्मन में उड़ान कमांडर थे। इस अवधि में, उन्होंने असाधारण उड़ान योग्यता, प्रशासनिक विषयों की गहरी सूझ-बूझ और असाधारण कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया। इसके बाद, उन्होंने उन उच्च स्तरों को बनाए ही नहीं रखा, बल्कि अपनी उड़ान की और प्रशासन की योग्यताओं को भी और निखारा है। वे एक योग्यता-प्राप्त उड़ान शिक्षक हैं और उन्होंने हमारे प्रशिक्षण संस्थानों में और एक विदेशी वायुसेना में प्रतिनियुक्ति के दौरान, बेजोड़ काम किया है। उन्होंने 3300 से अधिक घंटे दुर्घटनारहित उड़ाने भरी हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान लड़ाई की उड़ानों में अपनी असाधारण सफलताएं प्राप्त की जिसके कारण उन्हें वीर चक्र प्रदान किया गया। उन्होंने रक्षा स्टाफ कालेज से स्नातक का कोर्स भी पास किया है। वायुसेना मुख्यालय के अजीविका नियोजन कक्ष में सेवा के दौरान, उन्होंने स्थायी जनशक्ति नियोजित समिति के साथ मिल कर, अफसरों और वायुसैनिकों दोनों की जनशक्ति के नियोजन की जटिल समस्याओं को हल करने के लिए अथक काम किया है। इसके अतिरिक्त, अजीविका नियोजन अभिपत्र (पेपर) तैयार करने और प्रस्तुत करने में भी उन्होंने सराहनीय काम किया है। कार्मिक निदेशालय में उनके साथ काम करने वाले स्टाफ के लिए, उन्होंने परिश्रम, कर्तव्यपरायणता तथा निष्ठा की मिसाल कायम की है।

आधोपान्त, स्ववाङ्मन लीडर जसजीत सिंह ने वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है।

**6. स्ववाङ्मन लीडर ओम प्रकाश शर्मा (5104)**  
उड़ान (पायलट)

स्ववाङ्मन लीडर ओम प्रकाश भारतीय वायुसेना के पराध्वनिक स्ववाङ्मनों के अग्रगण्य में से हैं। उन्होंने पराध्वनिक वायुयानों पर 1200 से भी अधिक दुर्घटनारहित उड़ाने भरी हैं। वे चार पराध्वनिक लड़ाकू स्ववाङ्मनों के फ्लाइट कमांडर रह चुके हैं और उन स्ववाङ्मनों को नये प्रकार का वायुयान सौंपे जाने के बाद, थोड़े ही समय में उन स्ववाङ्मनों के सक्रिया के उच्च स्तर तक लाने का श्रेय मुख्यतः उन्हीं को है। एक सिगनल यूनिट के वरिष्ठ सक्रिया अफसर के रूप में कार्य करने के दौरान, उनकी संगठनात्मक योग्यता और परिश्रम के लिए पश्चिमी वायु कमान के एयर अफसर कमांडिंग इन-चीफ से उन्हें सराहना मिली। उन्होंने नई-नई सक्रियात्मक चालें सोचने में बहुत योगदान किया है। 1971 के युद्ध के दौरान, उन्होंने लड़ाई के लिए बारह उड़ाने भरीं, जिनमें से कुछ शत्रु के क्षेत्र में बहुत अन्दर तक की थीं, कुछ शत्रु के हवाई अड्डों पर रात को बम गिराने की थी और कुछ मार्ग रक्षण और आक्रामक कार्रवाई के लिए थीं। इस समय वे एक ऐसे पराध्वनिक स्ववाङ्मन के उड़ान कमांडर हैं जिसे हाल ही में नया वायुयान दिया गया है। इस वर्तमान नियुक्ति के दौरान, स्ववाङ्मन को सौंपे गए सभी काम पूरा करने के साथ-साथ उन्होंने पायलटों को इतना प्रशिक्षित कर दिया

है कि वे पूरी तरह से लड़ाई लड़ सकते हैं। ममाघात उड़ानों में उन की कार्यकुशलता उनके नीचे काम करने वाले सभी वायु और भूकर्मियों के लिए प्रेरण का एक स्रोत रही हैं।

आधोपान्त स्ववाङ्मन लीडर ओम प्रकाश शर्मा ने वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस, नेतृत्व और असाधारण कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है।

**7. स्ववाङ्मन लीडर राजेश्वर कुमार भल्ला (5191)**  
उड़ान (पायलट)

स्ववाङ्मन लीडर राजेश्वर कुमार भल्ला जनवरी, 1971 से उड़ान प्रशिक्षक स्कूल में सेवा कर रहे हैं। 1964 में उड़ान प्रशिक्षक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् से, वे विभिन्न पदों पर से प्रशिक्षण संबंधी उड़ाने भर रहे हैं और 4636 घंटे की, दुर्घटना-रहित, कुल उड़ानों में से, आपकी 2533 घंटे की उड़ाने प्रशिक्षण के ही लिए थीं। यूनिट की सभी गतिविधियों में इन्होंने बहुत रुचि ली है। इन्होंने फ्लाइट कमांडर के रूप में भी कार्य किया है, जिस में अपने प्रशिक्षण अनुभव का पूरा-पूरा लाभ उठा कर अपने अथक परिश्रम, सुव्यवस्थित योजना और पकड़ की वजह से इन्होंने कोर्स को समय पर ही पूरा कर दिया। इन्होंने काफी अधिक उड़ाने भरी हैं और उड़ान प्रशिक्षण की नई-नई तकनीकी खोज निकाली।

आधोपान्त स्ववाङ्मन लीडर राजेश्वर कुमार भल्ला ने वायु सेना की परम्परा के अनुरूप उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

**8. स्ववाङ्मन लीडर मोहिन्दर कुमार आनन्द (5498)**  
प्रशासन/हवाई यातायात नियंत्रक/छाता-कूद अनुदेशक

स्ववाङ्मन लीडर मोहिन्दर कुमार आनन्द ने जुलाई, 1959 में छाता-कूद अनुदेशक के रूप में अर्हता प्राप्त की। छाता-कूद प्रशिक्षण देते समय, आप अपने प्रशिक्षणाधियों के लिए वृद्ध निश्चय प्रेरणा और साहस के स्रोत रहे हैं। आप 375 बार छाते से नीचे उतर चुके हैं। दस से पन्द्रह हजार फुट की ऊंचाई पर छाते से नीचे उतरने के आंकड़े इकट्ठे करने में, इन्होंने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतनी अधिक ऊंचाई पर सबसे पहले कूद कर, इन्होंने न केवल अपने साहस का परिचय दिया बल्कि आंकड़े एकत्रित करने में भी मुख्य भूमिका निभाई। इतनी अधिक ऊंचाई से छाते से उतरने के लिए विभिन्न किस्म के छाते बनाने में ये आंकड़े में-बेशकीमती साबित हुए। इन परीक्षणों में और उपयोगी आंकड़े प्राप्त करने में, इन्होंने अपने प्राणों की भी परवाह न की और खतरों का पूरा सामना किया। मई, 1968 में, इन्होंने स्वेच्छा से देश में पहली बार बिना छाते के अवतरण किया। दिसम्बर, 1971 में इन्होंने ए० एन०-12 वायुयान से पहली बार बिना छाते से अवतरण किया, और इस प्रकार अपने अधीन काम करने वालों को आकाश से गोता मारने के लिए प्रोत्साहित किया। इनकी आगे बढ़ कर काम करने की लगन और नए नए प्रयोग करने की क्षमता की वजह से, देश में ही संशोधित किए गए एक नए किस्म के छाते पर परीक्षण किया गया और अन्त में उसे प्रयोग के लिए स्वीकार कर लिया गया। इसकी वजह से, हमारी

बहुत सी विदेशी मुद्रा बची। 28 फुट ग्राम के छातों की उप-युक्तता साबित करने और उसे प्रयोग के लिए स्वीकार कराने में भी इनका ही हाथ था।

आधोपान्त स्ववाङ्मन लीडर मोहिनंदर कुमार आनन्द ने वायु सेना की परम्परा के अनुकूल साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 9. स्ववाङ्मन लीडर शिवनाथ राठीर (5580) उड़ान (नेविगेटर)

स्ववाङ्मन लीडर शिव नाथ राठीर 1968 से वायुसेना मुख्यालय संचार स्वक्वाङ्मन में सेवा कर रहे हैं। उन्होंने इस यूनिट के नेविगेशन लीडर के रूप में दो वर्ष तक काम किया है। एच० एम० 748 और टी० यू० 124 वायुयान दोनों के लिए उनकी परिवहन श्रेणी उच्चतम है। उन्होंने कुल 6035 घण्टे की उड़ाने भरी हैं, जिसमें से 1915 घण्टे की उड़ाने उन्होंने उम यूनिट की नफरी पर करते हुए, महत्वपूर्ण व्यक्तियों को लाने ले जाने के लिए भरी। इस यूनिट में तैनाती से पूर्व, उन्होंने ए० एन० 12 वायुयान पर स्थानीय परीक्षक के रूप में कार्य किया और 1500 घण्टे से अधिक की संक्रियात्मक उड़ाने भरीं जिसमें संक्रियात्मक क्षेत्रों में रात में रसद पहुंचाने की उड़ाने भी शामिल हैं। स्टेशन की खेल कूद और अन्य गतिविधियों में उन्होंने बड़ी रुचि दिखाई है और संक्रिय रूप से भाग भी लिया है, साथ ही, ये कार्मिकों के कल्याण के लिए भी अधिक रूप से काम करते रहे हैं।

आधोपान्त, स्ववाङ्मन लीडर शिव नाथ राठीर ने वायुसेना की परम्परा के अनुकूल व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 10. स्ववाङ्मन लीडर रविन्दर नाथ खरबंदा (5589) उड़ान (पायलट)

स्ववाङ्मन लीडर रविन्दर नाथ खरबंदा जनवरी, 1971 से उड़ान प्रशिक्षण स्कूल में कार्य कर रहे हैं। वे जनवरी, 1969 से ही प्रशिक्षण उड़ाने भरते रहे हैं। और उन्होंने उनकी 4975 घण्टे की कुर्षटना रहित उड़ानों में से 1740 घण्टे की उड़ाने प्रशिक्षण के लिए थीं। उनकी अधिकतर प्रशिक्षण उड़ाने एच० टी० 2 वायुयान पर उसकी प्रारम्भिक अवस्था में रहीं। किसी भी प्रशिक्षक की सेवा के दौरान, प्रशिक्षण उड़ान की यह अवस्था व्यावसायिक रूप से सबसे कठिन और चुनौती भरी होती है। मई, 1968 में, एक प्रशिक्षण उड़ान के दौरान, उनके एच० टी० 2 वायुयान का पंखा (प्रोपेलर) टूट कर गिर गया। इतने पर भी, अपनी कुशाग्र बुद्धि और व्यावसायिक कुशलता से, वे वायुयान को, किसी प्रकार का नुकसान पहुंचाए बिना ही हवाई अड्डे पर उतार ही लाए।

फ्लाइट कमांडर के रूप में, प्रत्येक कैडेट की तरक्की में व्यक्तिगत रूप से रुचि लेने और अपने अधीन काम कर रहे प्रशिक्षकों के स्तर को बढ़ाने के लिए वे इस तरह आगे बढ़ कर काम करते थे, जैसे झूटी न हो कर उनका अपना निजी काम हो। उन्होंने एच० टी० 2 वायुयान में घूम सकने वाला पिछला पहिया लगाने के एक संशोधन का सुझाव दिया है। इसके लिए अपेक्षित आंकड़े उन्होंने 131GI/74

प्रस्तुत किए और उनकी ही देखरेख में एक वायुयान में यह संशोधन किया भी गया।

आधोपान्त स्ववाङ्मन लीडर रविन्दर नाथ खरबंदा ने वायु सेना की परम्परा के अनुकूल साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 11. स्ववाङ्मन लीडर अशोक प्रतापराव शिंदे बीर-चक्र (5671) उड़ान (पायलट)

स्ववाङ्मन लीडर अशोक प्रतापराव शिंदे, 1959 से लगातार लड़ाकू वायुयान उड़ा रहे हैं। उन्होंने जैट वायुयान पर 2331 घण्टे की उड़ाने भरी हैं, जिसमें से 635 घण्टे की उड़ाने पराध्वनिक किस्म के वायुयान पर थी। 8 मई, 1965 को जब कि वे एक नूफानी वायुयान उड़ा रहे थे, इंजन में आग लग गई। वायुयान को डेब-म्टिक तकनीक से सफलतापूर्वक जल्दी से नीचे उतार लाने में, उन्होंने बड़े साहस और विमान चालन कौशल का परिचय दिया। पाइलटों के आक्रमण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भी वह प्रथम आए। विदेश में पराध्वनिक वायुयान पर प्रशिक्षण में भी वे असाधारण योग्यता के साथ उत्तीर्ण हुए थे। इन्हीं के प्रयत्नों से, इनका स्ववाङ्मन 1972 में इनकी कमान द्वारा आयोजित निकट हवाई सहायता "कलोज एयर स्पॉट" प्रतियोगिता में सबसे बढ़िया रहा।

आधोपान्त, स्ववाङ्मन लीडर अशोक प्रतापराव शिंदे ने वायुसेना की परम्परा के अनुकूल साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 12 स्ववाङ्मन लीडर कृष्ण बिहारी सिंह, बी०एस०एम० (5865) उड़ान (पायलट)

स्ववाङ्मन लीडर कृष्ण बिहारी सिंह जनवरी, 1971 से राष्ट्रीय कैडेट कौर के नं० 1 (दिल्ली) वायु स्ववाङ्मन की कमान कर रहे हैं। अप्रैल-मई, 1973 में कानपुर में हुई प्रथम राष्ट्रीय ग्लाइडिंग चैम्पियनशिप के लिए राष्ट्रीय कैडेट कौर महानिदेशक की ग्लाइडिंग टीम का मनेजर/पाइलट इन्हें ही चुना गया था। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी पाइलटों के पास "गोल्ड 'सी' डिस्टेंस" लैंग बेज होना चाहिए; जिसका मतलब है कि वे 300 किलोमीटर की क्षेत्रपार उड़ान कर चुके हों। स्ववाङ्मन लीडर कृष्ण बिहारी सिंह को ग्लाइडर की क्षेत्रपार उड़ान का कोई अनुभव नहीं था। उन्होंने इस शर्त को पूरा करने की चुनौती को भी इसलिए स्वीकार कर लिया कि राष्ट्रीय कैडेट कौर महानिदेशक की टीम राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में भाग ले सके। उन्हें एक "ओलंपिया ग्लाइडर" दिया गया, जिसे 20 अप्रैल, 1973 को ही उड़ने योग्य बनाया गया था। मुश्किल से एक हफ्ता बाकी था और वे इस काम में पूरी लगन से जुट गए। 20 और 21 अप्रैल, को खराब मौसम की वजह से, 3000 कि० मी० की क्षेत्रपार उड़ान के उनके प्रयत्न अमफल रहे। 22 अप्रैल, 1973 को, वे कानपुर की 390 कि० मी० की दूरी तय करने के लिए उपयुक्त ऊंचाई प्राप्त करने की कोशिश में 11 बजे से ही लगे हुए थे। मौसम तब भी खराब था। अन्त में उन्होंने एक साहसिक कदम उठाया और संध्या के समय केवल 2600 फुट की ही ऊंचाई पर उड़ान शुरू कर दी। तिलपत रज पर तो, वे 1400 फुट तक नीचे उतर आए थे, परन्तु फिर अपन

बक्षता और दृढ़ निश्चय के बल पर, ऊपर उठने गए। 285 कि० मी० की दूरी तय करने के पश्चात्, काम तप प्रक्रिया और अंधेरा हो जाने की वजह से, उन्हें कानपुर में पहले ही उतरना पड़ गया। अगले दिन, ग्राउंड पार्टी ने उन्हें कानपुर पहुंचाया एक और असफल कोशिश के पश्चात् अन्त में, 27 अप्रैल, 1973 को उन्होंने कानपुर से बाराणसी की 306 कि० मीटर की दूरी तय कर ही ली। और इस प्रकार अपने लिए फंडेशन पेरिऑडिक इंटरनेशनल का "गोल्ड 'सी' डिस्टेन्स बैज" अर्जित" कर लिया। इस प्रकार, उन्होंने राष्ट्रीय कैंडेट कोर महानिदेशक की टीम को चैम्पियनशिप में भाग लेने योग्य बना दिया। राष्ट्रीय कैंडेट कोर में यह सम्मान प्राप्त करने वाले वे पहले व्यक्ति हैं। चैम्पियनशिप के दौरान, वे एक 1 : 18 के सर्पण अनुपात वाला (1947 में बना) ओलंपिया ग्लाइडर उड़ा रहे थे, जब कि उनके मुकाबले पर 1 : 28 से 1 : 36 तक के सर्पण अनुपात और बहुत ही बढ़िया उड़ान भरने वाले आधुनिक खेलप्लेन्स थे। उनका मुकाबला देश के नामी ग्लाइडर पाइलटों से था, जो उनसे कहीं ज्यादा अनुभवी थे। इस सब के बावजूद, वे राष्ट्रीय स्तर के ग्यारह प्रतिद्वन्दियों में चौथा स्थान प्राप्त करने में सफल रहे।

स्वाइन लीडर कृष्ण बिहारी मिह ने वायुसेना की उच्च परम्पराओं के अनुकूल माहम, दृढ़-निश्चय, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 13. स्ववाइन लीडर अरुण विट्ठल कामत (6009)

उड़ान (पायलट)

स्ववाइन लीडर अरुण विट्ठल कामत को दिसम्बर, 1960 में भारतीय वायुसेना में कमीशन दिया गया। वे संक्रियात्मक वायुयानों पर 1400 घंटों की उड़ानें भर चुके हैं। 1971 भारत-पाक युद्ध के दौरान, वे एक लड़ाकू स्ववाइन के फ्लाइट कमांडर थे, जो पश्चिमी क्षेत्र में एक अग्रिम अड्डे से कारवाई कर रहा था। 9 दिसम्बर, 1971 को उन्हें दो वायुयानों के एक संकलन का नेतृत्व करने के लिए तैनात किया गया और उनका लक्ष्य पाकिस्तान का एक हवाई अड्डा था। रात के इलाके पर उनका यह चौथा संक्रियात्मक मिशन था। रात की विमान भेदी गनों और हल्की मशीन गनों की भारी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने आक्रमण कर दिया। उनका वायुयान बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। यह देख कर कि अब वायुयान का काम में रखना असम्भव है, उन्होंने वायुयान छोड़ दिया। जमीन पर गिरने के धक्के से, इनकी दोनों टांगे टूट गईं।

इस प्रकार, स्ववाइन लीडर अरुण विट्ठल कामत ने वायुसेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल माहम, दृढ़ता और उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 14. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनोहर गोपालदास मसन्द (7666)

उड़ान (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनोहर गोपालदास मसन्द फरवरी 1968 से एक भारी परिवहन स्ववाइन में नियुक्त हैं। यद्यपि वे अर्हता-प्राप्त उड़ान प्रशिक्षक नहीं हैं, फिर भी उन्होंने जूनियर पाइलटों के चुनने और अर्हता-प्राप्त बनाने के काम को बहुत ही प्रभावी

रूप से पूरा किया। उन्होंने 4310 घंटों की उड़ानें की हैं, जिसमें 1850 घंटे की उड़ानें उन्होंने लड़ाकू और पूर्वी क्षेत्र के कठिन और जोखिम भरे पर्वतीय क्षेत्रों में की हैं। 22 जुलाई 1972 को, उन्हें लड़ाकू क्षेत्र में किसी जगह एक अनुपालन क्षेत्र के लिए एक जूनियर पाइलट की जांच करने के लिए नियुक्त किया गया। मिशन की अत्यंत गम्भीर अवस्था के दौरान जबकि भार वास्तव में वायुयान में बाहर निकल रहा था, उनके वायुयान के एक इंजन ने काम बन्द कर दिया। फ्लाइट लेफ्टिनेंट मसन्द ने तत्परता से वायुयान का नियंत्रण संभाल लिया और अपनी उच्च कोटि की व्यावसायिक योग्यता तथा कौशल के बल पर और आत्मविश्वास के साथ सही ढंग से उस आपात् स्थिति को बचा गए। इस प्रकार उन्होंने अपने वायुयान को एक भयंकर दुर्घटना से बचा लिया। उन्होंने सिर्फ तीन ही इंजनों के सहारे रसद गिराने का कार्य पूरा किया और बाद में एक अग्रिम हवाई अड्डे पर सुरक्षित रूप से आपाती अवतरण किया। 1971 के भारत-पाक संक्रियाओं के दौरान उनकी यूनिट को जो भी संकट भरे संक्रियात्मक मिशन सौंपे गए, वे उनमें जाने को सदा तत्पर रहे। 11 और 12 दिसम्बर 1971 को बंगला देश में जो बटालियन ग्रुप उतारे गए, उसमें उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके अलावा उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण मिशनों पर उड़ानें की हैं।

आधोपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट मनोहर गोपालदास मसन्द ने वायुसेना की सर्वोत्तम परम्परा के अनुकूल माहम, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है।

### 15. फ्लाइट लेफ्टिनेंट विशाल कुमार सक्सेना (8054)

प्रशासन/छाता-कूद प्रशिक्षक

फ्लाइट लेफ्टिनेंट विशाल कुमार सक्सेना 1965 से छाता-कूद प्रशिक्षक का कार्य कर रहे हैं। इस अवधि में, उन्होंने 700 वास्तविक अवतरण किए हैं, और इस प्रकार, छाता-कूद प्रशिक्षकों में उनका स्थान दूसरा है। वे रात के समय भी सबसे अधिक बार उतरे हैं। वे सात प्रकार के परिवहन वायुयानों पर से कूद चुके हैं और नई किस्म के छातों तथा विमानवाहित उपकरण की जांच के लगभग सभी परीक्षणों में भाग ले चुके हैं। दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान, उन्हें पूर्वी क्षेत्र के विमानवाहित संक्रियाओं के लिए नियत कुछ सैनिकों के लिए वायुसेना के एक अड्डे पर डिस्टिचमेंट कमांडर के रूप में नियुक्त किया गया था। अनेक बाधाओं के बावजूद, उन्होंने कुशलता से यह कार्य पूरा किया और सबसे आगे वायुयान में प्रेक्षक के रूप में उड़ान की।

आधोपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट विशाल कुमार सक्सेना ने वायुसेना की सर्वोत्तम परम्परा के अनुकूल माहम, व्यावसायिक कौशल और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया।

### 16. फ्लाइट लेफ्टिनेंट बलविंदर जीत सिंह संधु (9427)

उड़ान (पायलट)

8 फरवरी, 1973 को, फ्लाइट लेफ्टिनेंट बलविंदर जीत सिंह संधु पोर्ट ब्लेयर से दमदम जाने वाली फ्लाइट पर, एक पैकेट वायुयान के कॅप्टेन थे। इसमें पन्द्रह यात्री और सामान ले जाया जा रहा था। बीच समुद्र में दमदम से 600 समुद्री मील की दूरी पर पाइलट ने देखा कि दाहिने इंजन का पंखा (प्रोपेलर) सही नहीं

चल रहा है। यद्यपि उसने तत्काल इस दोष को दूर करने के वे सभी उपाय किए जो निर्धारित हैं, किन्तु वह उस पंखे को सही न कर सका। सही काम न देने वाले पंखे से जो कर्षण भारी मात्रा में पैदा हो रहा था, उसके कारण वायुयान द्रुतगति से नीचे गिरने लगा। उस समय, वायुयान का निकटतम एयर्जो अड्डा, रंगून, भी 175 समुद्री मील पर था। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट संधु ने तत्काल परिस्थिति का जायजा लिया और वायुयान को, सामान और अन्य उपस्कर फैंक कर, हल्का करने की कोशिश की। इसके बावजूद, वायुयान बराबर नीचे की ओर आता रहा और उन्हे लगा कि उसमें रंगून नहीं पहुंचा जा सकता। इसलिए, उन्होंने अंतिम उपाय के रूप में वायुयान को बैसीन पर उतारने का निश्चय किया, जहां एक छोटा सा कच्चा दौड़पथ है। उन्होंने वायुयान को, किसी प्रकार की क्षति पहुंचे बिना सुरक्षित उतार लिया। इस गंभीर आपात्कालीन स्थिति में भी स्थिर रहकर ही फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट संधु परिस्थिति को सभालने के लिए तुरन्त और सही फैसला कर सके, अन्यथा भयंकर दुर्घटना हो सकती थी। स्वयं अपने आदर्श और नेतृत्वशक्ति से उन्होंने अपने कर्मिंदल और यात्रियों दोनों में ही विश्वास भर दिया।

आधोपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट बलबिंदर जीत सिंह संधु ने वायुसेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुकूल साहस, दृढ़ता और व्यावसायिक कौशल का परिचय दिया।

#### 17. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट तेजिंदर सिंह (9535), उड़ान (पायलट)

29 सितम्बर 1969 में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट तेजिन्दर सिंह एक हेलीकाप्टर यूनिट में काम कर रहे हैं। कुल 2375 उड़ानें घंटों में से, उन्होंने 1500 घंटों की सक्रियात्मक उड़ानें की हैं। अगस्त, 1967 में जब वे मिजोरम में एक अग्रवर्ती हेलीकॉप्टर पर अवतरण कर रहे थे तो उनके हेलीकाप्टर का एक रोटर ब्लेड उड़ गया और पीछे के रोटर को भी काटता चला गया। इस दुर्घटना में वे जखमी हो गए और उन्हें निचली मेडिकल श्रेणी में रख दिया गया। इस दुर्घटना से उनकी हिम्मत नहीं टूटी, और एक वर्ष बाद जैसे ही वे ठीक हुए, उन्होंने पूरे जोश के साथ उड़ानें शुरू कर दीं और सदैव स्वयं अपने आप को आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। 1971 के भारत-पाक संक्रियाओं के दौरान उन्होंने पश्चिम क्षेत्र में, दिन और रात, अनेक सक्रियात्मक उड़ानें कीं। बाद में, उनकी यूनिट को अग्रवर्ती सेनाओं के लिए हवाई अनुरक्षण के कार्य पर लगाया गया। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट तेजिंदर सिंह डिटैचमेंट कमांडर थे। उनकी अपनी कड़ी मेहनत और आदर्श के बल पर ही, उनकी डिटैचमेंट खराब मौसम शुरू होने से पहले जितना थोड़ा बहुत समय मिल सका, उसमें अधिकतम टनभार विमान द्वारा ले जाने में सफल हुई। 21 फरवरी 1973 को दोपहर बाद एक अग्रवर्ती क्षेत्र से एक बहुत ही गंभीर हताहत को निकाल लाने के लिए एक आपात-संदेश प्राप्त हुआ। हताहत की जान बचाने के लिए, अंधेरी रात में उड़ान करनी आवश्यक थी। इस कार्य के लिए, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट तेजिंदर सिंह को तैनात किया गया। उन्होंने हताहत को निकाल लाने का कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया और एक मूल्यवान जान बचाई।

आधोपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट तेजिंदर सिंह ने वायुसेना की सर्वोच्च परम्परा के अनुकूल साहस, दृढ़ता, व्यावसायिक कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

#### 18. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट ब्रज मोहन मलिक (9874) उड़ान (नेवीगैटर)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट ब्रज मोहन मलिक एक बमबर्क स्ववाइन में भर्ती हुए थे और उन्होंने 700 से अधिक घंटों की उड़ानें भर ली हैं। उनकी मार्ग निर्देशन दक्षता और बम गिराने के कार्य बेमिसाल रहे हैं। हालांकि वे सेवा में अभी हाल ही में आए हैं, तो भी वे भारी जिम्मेदारियां सभालने के लिए अपने को हमेशा प्रस्तुत करते हैं और सभी किस्म के कार्यों को चाहे उड़ान के हों या भूमि पर, हंसते-हंसते स्वीकार करते रहे हैं। 1971 के भारत-पाक संक्रियाओं के दौरान वे पांच मिशनों पर गए और उचित मार्ग निर्देशन और अच्छे बमबारी करके सभी को सफलतापूर्वक पूरा किया। "स्टारम एकाचेन्ज" परियोजना की उड़ान के लिए उन्हें ही चुना गया। जिसमें उन्हें मानसून में समस्त भारत पर से कठिन और दक्षतापूर्वक उड़ान भरनी थी। इस दौरे के दौरान उन्होंने उच्च कोटि के आत्म-विश्वास और उड़ान योग्यता का परिचय दिया।

आधोपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट ब्रज मोहन मलिक ने वायुसेना की उच्च परम्पराओं के अनुकूल मार्गनिर्देशन योग्यता, नेतृत्व शक्ति और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

#### 19. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाश बलवन्तराव जादव (10149) उड़ान (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाश बलवन्तराव जादव एक सक्रियात्मक स्ववाइन में पिछले सात साल से काम कर रहे हैं। अपनी थोड़ी सी सेवा में ही, उन्होंने 3900 घंटों से अधिक की उड़ानें भर ली हैं जिसमें से 2600 से भी अधिक घंटों की उड़ानें पूर्व और पश्चिम के सक्रियात्मक क्षेत्र में थीं। उन्होंने अग्रिम इलाकों में सामान गिराने के लिए 1174 और सैनिक उतारने के लिए 106 उड़ानें भरीं। इनकी दुर्घटना रहित सक्रियात्मक उड़ानें, घंटों और संख्या, दोनों ही दृष्टि में अपने आप में रिकार्ड हैं। दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान, पूर्वी क्षेत्र में छाता अवतरण में भी उन्होंने भाग लिया था।

आधोपान्त फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाश बलवन्तराव जादव ने वायुसेना की परम्परा के अनुकूल व्यावसायिक कुशलता, नेतृत्व-शक्ति और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

#### 20. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट नोएल थामस लोबो (10574), उड़ान (पायलट)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट नोएल थामस लोबो जून 1970 में एक सक्रियात्मक स्ववाइन में काम कर रहे हैं। इस तीन वर्ष की अवधि के दौरान, उन्होंने कुल 2167 घंटों की उड़ानें भरी, जिसमें से 1325 घंटों की उड़ानें सक्रियात्मक थीं। उन्होंने अग्रिम अवतरण स्थलों पर 100 अवतरण भी किए। 13 मार्च 1973 को वे पहाड़ियों में काफी भीतर विमान-पातन उड़ान पर थे। पातन क्षेत्र के ऊपर जब वे दूसरा चक्कर लगा रहे थे, कि इनके वायुयान का दाहिना स्टार इंजन झिलने लगा। उन्होंने पातन बन्द कर दिया और अपने वायुयान को ऊपर ले जाने लगे ताकि वे पहाड़ियों से सुरक्षित बाहर निकल सकें। 6000 फुट की ऊंचाई पर पहुंचने पर, इंजन में से धुआं निकलने लगा और उन्होंने महसूस किया कि भारी मात्रा में तेल रिस रहा है। उन्होंने प्रभावित इंजन को तुरन्त ही सही किया।

पावर चालू करने पर, बाएं इंजन में भी कम्पन शुरू हो गया और वायुयान नीचे आने लगा। इस कठिन मुसीबत में उन्होंने कुछ सामान गिरा देने का आदेश दिया और एक ही इंजन से अवतरण करके दूटे हुए वायुयान को बेस पर सुरक्षित वापिस ले आए। उन्होंने संकट का मुकाबला जिस कुशलता से किया और समय पर जो कार-वाई की, उससे कर्मी दल की बेशकीमती जानें तो बच ही गई वायु-यान और अन्य सरकारी सम्पत्ति भी नष्ट होने से बच गई।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट नोएल थामस लोबो ने, इस प्रकार, वायु-सेना की परम्परा के अनुकूल साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 21. फ्लाइट अफसर बलदेव सिंह (10991), उड़ान (पायलट)

फ्लाइट अफसर बलदेव सिंह जून 1967 से डकोटा पायलट हैं। उन्होंने कुल 2200 घंटे की उड़ानें भरी हैं, जिसमें से 1200 घंटे की सक्रियात्मक उड़ानें पूर्वी क्षेत्र के खतरनाक इलाकों पर थीं। इनकी अब तक की उड़ानें दुर्घटना रहित रही हैं और सक्रिया स्तर उच्च कोटि का है। 10 सितम्बर 1972 को, इन्हें एक वायु-अनु-रक्षण-उड़ान भरने को कहा गया। पातन-क्षेत्र पर परिपथ पर आते समय, उन्होंने जबरदस्त कम्पन महसूस किया और देखा कि बाएं इंजन से धुआं निकल रहा है। उन्होंने उड़ान रद्द करने का फैसला कर लिया। किन्तु, कम्पन और भी बढ़ गई। और उन्हें इंजन को सही करना पड़ा। उनकी भरसक और बार-बार कोशिशों के बावजूद इंजन सही नहीं हुआ और वायुयान तेजी से नीचे आने लगा। यहां तक कि पहाड़ियों में उड़ान के लिए जो सुरक्षित ऊंचाई तय है, वायुयान उससे भी नीचे आ गया। उन्होंने समय पर, उचित निर्णय लिया और सामान को बाहर फेंकने का आदेश दे दिया ताकि वे उस न्यूनतम ऊंचाई पर तो रह सकें, जिससे बचाव के रास्ते से पहाड़ियों से बाहर निकला जा सके। परन्तु, वायुयान फिर भी नीचे आता रहा। इधर, चालू इंजन भी तेजी से गरम होने लगा और सही काम न करने के कारण विडमिलिंग करने लगा। इसलिए, उन्होंने थोड़ी पावर देकर इंजन को फिर से चालू किया ताकि पंखे की विडमिलिंग से पैदा होने वाले कर्षण का सामना किया जा सके। 57 बोरे सामान फेंक देने के बाद, वायुयान की नीचे आने की दर कुछ घटी। खराब मौसम में, खराब इंजन से ही एक घंटे की उड़ान के बाद वे अड़्डे पर सुरक्षित उतरने में सफल हो गए।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट बलदेव सिंह ने इस प्रकार वायुसेना की परम्परा के अनुकूल साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 22. 17140 मास्टर वारंट अफसर प्राण कृष्ण घोष, भू प्रशिक्षण प्रशिक्षक/छाता कूब अनुबेशक

मास्टर वारंट अफसर प्राण कृष्ण घोष को पहले भारतीय छाता कूब प्रशिक्षक होने का गौरव प्राप्त है जिन्होंने 1946 में चकलाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया था। भारतीय वायुसेना के सबसे वरिष्ठ छाता कूब प्रशिक्षक होने के नाते आजादी के बाद इन्हें छाता-कूब प्रशिक्षण कार्य के संगठन और संचालन की जिम्मेदारी सौंपी गई। इन्हीं की पहल शक्ति, परिश्रम, पटुता और कर्तव्य निष्ठा के कारण थोड़े से समय में ही आगरा में सेना के छाताधारी सैनिकों

की सिखलाई का काम शुरू हो गया। छाता-कूब प्रशिक्षक के रूप में मास्टर वारंट अफसर घोष ने 430 अवतरण किए हैं। मुश्किल से मुश्किल कार्यों के लिए उन्होंने हमेशा स्वेच्छा से अपनी सेवाएं अर्पित की हैं और बहुत ऊंचाई से समुद्र तथा रेगस्तानी इलाकों में हवाई छतरी से अवतरण किए हैं। आठ अलग-अलग किस्म के वायुयानों से कूब कर इन्होंने एक रिर्काई कायम किया है। नई हवाई छतरियों और वायुवाहित उपस्कर से संबंधित जांच कार्यों से वे हमेशा सम्बद्ध रहे हैं। हालांकि वे 51 वर्ष के हो चुके हैं लेकिन आज भी वे सक्रिय छाता-कूब प्रशिक्षक हैं। हवाई छतरियों के बारे में अपनी जानकारी और उत्सुकता से उन्होंने ऐसी मिसाल कायम की है जिससे उनके वरिष्ठ और कनिष्ठ अधिकारी सभी सीख ले सकते हैं। उनके कठिन परिश्रम, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा से उनके अधीन काम करने वाले छाता-कूब प्रशिक्षकों को ही नहीं थल सेना के छाताधारी सैनिकों को भी प्रेरणा मिलती रही है।

आधोपान्त मास्टर वारंट अफसर प्राण कृष्ण घोष ने भारतीय वायुसेना की महान परम्परा के अनुकूल साहस, व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है।

### 23. 24197 मास्टर वारंट अफसर चेरुकुत वेणु गोपाल कुरुप फ्लाइट गनर/फिटर आर्मेर

मास्टर वारंट अफसर चेरुकुत वेणु गोपाल कुरुप 1963 से जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में एक परिवहन स्ववाहन में फ्लाइट गनर के रूप में कार्य कर रहे हैं। इन्होंने 3675 घंटे की उड़ानें की हैं जिनमें परिवहन संक्रियाओं और रसद गिराने के लिए की गई 1280 घंटे की सक्रियात्मक उड़ानें भी शामिल हैं। वे एक कुशल बुद्धि वायुसैनिक हैं जिनका अनुकरणीय आचरण और ऊंचे दर्जे की व्यावसायिक कुशलता उनके साथियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रही है। दिसम्बर 1971 की संक्रियाओं के दौरान गनरों की ब्रेड कमी के बावजूद, मास्टर वारंट अफसर कुरुप ने बमबारी पर भेजे जाने वाले वायुयानों को तैयार करने का काम का स्वयं परिक्षण किया और सक्रियात्मक उड़ानों पर जाने के लिए अपने को भी बराबर पेश किया।

आधोपान्त मास्टर वारंट अफसर चेरुकुत वेणु गोपाल कुरुप भारतीय वायुसेना की महान परम्परा के अनुकूल व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

### 24. 36229 मास्टर वारंट अफसर अरुण कुमार चौधरी सिगनलर (वायु)

मास्टर वारंट अफसर अरुण कुमार चौधरी को 1943 में भारतीय वायुसेना में भर्ती किया गया था और 1950 से वह प्रभावशाली वायुकर्मी के रूप में कार्य कर रहे हैं। इन्हें 6000 घंटे की उड़ानें भरने का श्रेय है जिनमें से 2000 घंटे की उड़ानें सक्रियात्मक रही हैं। वे डकोटा वायुयान के अर्हता प्राप्त सह-पायलट भी हैं और 1962 की लड़ाई में भी इनकी सेवाओं का पूरा-पूरा लाभ उठाया गया था। नवम्बर-दिसम्बर 1962 में इन्होंने युद्ध क्षेत्र में रात-दिन सक्रियात्मक उड़ानें कीं और कुल 224 घंटे की सक्रियात्मक उड़ानें भरीं। इन्होंने गोआ-सक्रियाओं में भी भाग लिया था और ये गोआ के दीव नामक स्थान



पर उतरने वाले सबसे पहले वायुयान के वायुकर्मी दल के सदस्य थे। असाधारण कर्तव्य निष्ठा के लिए 1964 में वायुसेना अध्यक्ष ने इनकी सराहना की। अनुपम संगठन कौशल, ऊंचे दर्जे के व्यवसायिक ज्ञान और असाधारण कर्तव्य-निष्ठा के बल पर मास्टर वारंट अफसर चौधरी ने हमेशा अपना काम कठिन परिश्रम करके बड़ी मुस्तैदी से पूरा किया है। काम-काज में इन्होंने जिस प्रतिभा और निष्ठा का परिचय दिया, विशेष रूप से उसी के बल पर ही इनकी यूनिट को सिगनलरों में शत प्रतिशत वर्गीकरण प्राप्त करने का श्रेय मिल सका।

आधोपान्त मास्टर वारंट अफसर अरुण कुमार चौधरी ने भारतीय वायुसेना की महान परम्पराओं के अनुकूल व्यवसायिक कुशलता और असाधारण कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

#### 25. 40702 वारंट अफसर विधु भूषण दास फ्लाइट गनर

वारंट अफसर विधु भूषण दास मई, 1966 से एक भारी परिवहन स्क्वाड्रन में काम कर रहे हैं। उनकी गिनती अग्रणी फ्लाइट गनरों में की जाती है जिन्होंने अपनी इच्छा से फ्लाइट गनरों के ट्रेड को चुना और पिछले 20 साल से फ्लाइट गनर के रूप में उड़ान कर रहे हैं। उन्होंने 6100 घंटे उड़ाने की हैं जिनमें 2000 घंटे की समुद्री संक्रिया उड़ाने और 1450 घंटे पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में संक्रिया उड़ाने भी शामिल हैं। वे अपने यूनिट में नए नए तैनात होने वाले फ्लाइट गनरों को प्रशिक्षित करने में बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। लीडमास्टर और फ्लाइट गनर के रूप में अपनी ज़ूटियां करने में उन्होंने उच्चकोटि की व्यावसायिक कुशलता और कर्तव्य-भावना का परिचय दिया है तथा अपने साथियों के लिए प्रेरणादायक रहे हैं। पाकिस्तान के साथ 1971 के संक्रियाओं के दौरान वे अपनी इच्छा से दुश्मन के इलाके में बम गिराने की संक्रियात्मक उड़ानों पर गए।

आधोपान्त वारंट अफसर विधु भूषण दास ने भारतीय वायुसेना की महान परम्पराओं के अनुकूल साहस, छद्म-निश्चय और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

#### 26. 223794 फ्लाइट सार्जेंट सुरजीत सिंह भू प्रशिक्षण प्रशिक्षक/छाता कूद प्रशिक्षक

फ्लाइट सार्जेंट सुरजीत सिंह ने 1963 में छाता-कूद प्रशिक्षक के रूप में अर्हता प्राप्त की। हवाई छतरी से 500 बार उतरने वाले वे पहले वरिष्ठ नान कमीशंड अफसर थे। 9 वर्ष की अल्पावधि में इन्होंने जो 500 अवतरण किए हैं उनमें 100 रॉलि अवतरण भी शामिल हैं। इन्होंने देश में बनी और यहीं पर फेर-बदल कर सुधारी गई हवाई छतरियों की जांच के लिए वास्तविक-कूद में भी भाग लिया। दिसम्बर 1968 में, इन्होंने देश में मुक्त पैराशूट अवतरण करने वाले पहले नान कमीशंड अफसर होने का श्रेय प्राप्त किया। वे 1969 में, 15200 फुट की ऊंचाई पर स्थित एक अवपातन

जोन में बहुत ऊंचाई से अवतरण करने वाली टीम के सदस्य थे। बड़ी तेज़ गति में अवतरण विरहित वायुमण्डल, भीषण गर्मी और पथरीली पहाड़ी इलाके जैसे खतरों के बावजूद इन्होंने वास्तविक-कूद का जोखिम भोग लेकर अवतरण परीक्षणों में अपनी टीम को सफलतापूर्वक बनाया। अपनी जान की तकलीफ भी परवाह न करके इन्होंने सारे अवतरण पूरे किये और बाद में अवपातन जोन सुरक्षा अफसर की कठिन और दुःसाध्य प्रेषण तथा दूसरी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया।

इस प्रकार फ्लाइट सार्जेंट सुरजीत सिंह ने भारतीय वायुसेना की महान परम्पराओं के अनुकूल व्यवसायिक कुशलता और असाधारण कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

#### 27. 233677 सार्जेंट पृथिव्यापरावथ विजयन उड़ान इंजीनियर

सार्जेंट पृथिव्यापरावथ विजयन जनवरी 1970 से, एक संक्रिया स्क्वाड्रन में फ्लाइट इंजीनियर के पद पर काम कर रहे हैं। इन्होंने अब तक 686 घंटे उड़ान की हैं। वायुयान के दोष खोज निकालने की इन में विलक्षण शक्ति है। इन्होंने उड़ान में हमेशा गहरी रुचि ली है और अपने कर्तव्यों का पालन अटल उत्साह और जोश से किया है। इन्होंने उड़ान में कई गम्भीर परिस्थितियों का गम्भीरता और विश्वास से सामना किया है। स्क्वाड्रन में रहते समय, उड़ान के दौरान इनके वायुयान के इंजिन में चार-बार खराबी पैदा हुई। उन सभी अवसरों पर, इन्होंने समय से दोषों का पता लगाया और पायलटों को उनसे निपटने के ऐसे ठोस उपाय सुझाए कि वायुयान सही-सलामत नीचे उतारा जा सका।

आधोपान्त सार्जेंट पृथिव्यापरावथ विजयन ने वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, कार्यकुशलता और असाधारण कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

#### 28. 269320 कार्पोरल सईब अहमद खान फ़िटर II एयरफ्रेम

22 अक्टूबर, 1972 को, पश्चिमी कमान अयुध प्रति-योगिता में बमबारी की उड़ान के लिए एक संक्रिया स्क्वाड्रन के वायुयान की व्यवस्था की गई। उड़ान भरते समय ज्यों ही वायुयान ने जमीन को छोड़ा, ये वायुयान की जांच करा रहे थे। इन्होंने महसूस किया कि नोज़ रैंड-कैरिज वे में रडर नियंत्रण केवल की नोक में एक मामूली सी खराबी है। क्योंकि वायुयान और उसके कंट्रोलों की तकनीकी जानकारी में ये बहुत निपुण थे, इसलिए इन्होंने हिमाय ब्रिटाया कि क्योंकि केवल तना हुआ नहीं था, इसलिए शायद वह कहीं से चटक गया होगा। शीघ्र ही, इन्होंने परिस्थिति की गम्भीरता को महसूस किया और यह निर्णय किया कि वायुयान को उड़ान पर आगे नहीं जाना चाहिए और उसे जांच के लिए वापिस भेज दिया। बाद में वायुयान की जांच से पता चला की रडर नियंत्रण केवल टूट चुका था। जिससे

रडर नाकारा हो चुका था। क्योंकि यह केवल न होने पर भी, विमेश (डिफेंसिशन) ग्रेक प्रणाली काम करती है, इसलिए जब तक वायुयान 'उड़ान गति' प्राप्त नहीं करता, पाइलट को रडर नाकारा होने का पता नहीं चलता।

कार्पोरल सईद अहमद खान द्वारा समय पर फार्वाई करने के कारण वायुयान एक सम्भावित बड़ी दुर्घटना से बच गया। इस असाधारण कार्य में इन्होंने वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, असाधारण व्यवसायिक कुशलता और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया है।

सं० 86 प्रज्ञ/74—राष्ट्रपति निम्नलिखित कामियों को असाधारण कर्तव्यपरायणता अथवा साहस के कार्यों के लिए "वायुसेना मैडल" "एयर फोर्स मैडल" का बार सहर्ष प्रदान करते हैं :—

**1. विंग कमांडर पिरथी सिंह, बी० एम० (4480)  
उड़ान (पायलट)**

विंग कमांडर पिरथी सिंह को भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में अप्रैल, 1953 में पाइलट के रूप में कमीशन प्रदान किया गया था। वे 7 दिसम्बर, 1970 से हिन्दुस्तान ऐक रोनाटिक्स लिमिटेड के बंगलौर डिवीजन में टैस्ट पाइलट के रूप में प्रतिनियुक्त हैं। इस अवधि के दौरान उन्होंने 669 घंटों की जांच उड़ानें कीं, जिसमें प्रोटोटाइप तथा उत्पादन जांच शामिल है। एच एफ-24 प्रशिक्षण वायुयान 'किरण' के विकास में उनका सक्रिय योगदान रहा है तथा नैट वायुयान में बाहर लगने वाली बड़ी इंधन टंकी के परीक्षण का कार्य भी उन्होंने किया है। इस अत्यधिक कठिन और परिश्रम-साध्य कार्य के दौरान, उन्होंने उच्च स्तर की दक्षता और सूक्ष्मता का परिचय दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने एक और सक्रियात्मक किस्म के वायुयान के बूस्टर की प्रारम्भिक जांच कार्य में भी सहयोग दिया है तथा इस उपकरण के साथ पहली सफल उड़ान भी की है।

आधोपान्त विंग कमांडर पिरथी सिंह ने साहस व्यावसायिक कुशलता तथा अद्वितीय कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

**2. विंग कमांडर पद्मनाभ अशोक, बी० एम० (4653)  
उड़ान (पायलट)**

विंग कमांडर पद्मनाभ अशोक को जनवरी 1954 में भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में पाइलट के रूप में कमीशन प्रदान किया गया था। उनकी सेवाएं अगस्त, 1968 में हिन्दुस्तान ऐरोनाटिक्स लिमिटेड को सौंपी गयी। हिन्दुस्तान ऐरोनाटिक्स लिमिटेड के कानपुर डिवीजन के मुख्य जांच पाइलट के रूप में, उन्होंने एच एस-748 भारवाहक वायुयान की, प्रारम्भ से लेकर पूर्ण होने तक की सभी जांच उड़ानें कीं। इस के लिए उन्हें 40 उड़ानें भरनी पड़ीं और प्रत्येक उड़ान का औसत समय 35 से 40 मिनट का रहा। उनके अतिरिक्त, 5 घंटे की प्रारम्भिक निकासी उड़ान भी उन्होंने की थी। छाता कूद या रसद गिराने के कार्यों की उड़ानों

का पहले से कोई अनुभव न होने पर भी उन्होंने अच्छे उड़ाने की और समय से काफी पहले अपने लक्ष्य की प्राप्ति की। इन परीक्षणों के दौरान, उन्होंने छाता से कूदने तथा रसद गिराने वाले उड़ान भरने की कला में भी प्रगति की, जिसके बहुत बढ़िया परिणाम निकले। उन्होंने एच एस-748 वायुयान के दोनों ओर के दरवाजे खुले छोड़कर, प्रथम बार एक प्रारम्भिक परीक्षण उड़ान की। आकाश में से अपने आप सामान गिराने के लिए, वायुयान की नोक ऊंची रख कर उड़ाने की तकनीकी अपनानी पड़नी थी, ताकि सामान अपने आप नीचे गिरे। उन्होंने उस उड़ान तकनीक का मावधानी से विश्लेषण किया और ऐसी उड़ान प्रणाली का विकास किया, जिससे रसद गिराने के कार्यों में अत्यधिक सफलता मिली।

आधोपान्त विंग कमांडर पद्मनाभ अशोक ने, साहस, व्यवसायिक कुशलता तथा अद्वितीय कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

**3. विंग कमांडर ब्रजेश धर जयाल, बी० एम०  
(4072) उड़ान (पायलट)**

विंग कमांडर ब्रजेश धर जयाल को अक्टूबर, 1955 में भारतीय वायुसेना की उड़ान शाखा में पायलट के रूप में कमीशन प्रदान किया गया था। वे 15 जनवरी, 1969 से 19 अप्रैल, 1972 तक हिन्दुस्तान ऐरोनाटिक्स लिमिटेड के नासिक डिवीजन में तथा 20 अप्रैल 1972 से बंगलौर डिवीजन में प्रतिनियुक्त रहे हैं। नासिक डिवीजन में अपने पूरे कार्यकाल के दौरान, उन्होंने विंग 21 वायुयान की परीक्षण उड़ानों में अत्यधिक दक्षता तथा योग्यता का परिचय दिया। उन्होंने विंग 21 वायुयान में 424.25 घंटों की 606 परीक्षण उड़ानें कीं, जिससे भारत में पूर्ण रूप से निर्मित वायुयान की परीक्षण उड़ानें भी सम्मिलित हैं। बंगलौर के अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने विभिन्न प्रकार के वायुयानों की परीक्षण उड़ानों में उच्च दक्षता तथा दृढ़-निश्चय का परिचय दिया और 465.15 घंटों की उड़ानें कीं। किरण और नैट वायुयानों के विकास के कठिन परीक्षणों में उनका सहयोग रहा है। जिसमें इन विमानों की बाहरी इंधन टंकियों के क्षेपण के परीक्षण भी शामिल थे। इसमें उन्होंने गहरी रुचि और असाधारण दक्षता का परिचय दिया। उनकी निपुणता से बनाई गई योजनाओं तथा अत्यधिक दक्षता से उनके निष्पादन में ही, बहुत ही कम समय में कृषि वायुयान के नमूने समुद्र तल पर उड़ान भरने में सफलता मिल सकी।

आधोपान्त विंग कमांडर ब्रजेश धर जयाल ने, साहस, व्यवसायिक कुशलता तथा कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

अशोक मित्र  
राष्ट्रपति के सचिव

**विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय****(विधायी विभाग)**

नई दिल्ली, दिनांक 18 जून 1974

**संकल्प**

सं० एफ० 4 (1)(2)/74-रा० भा० :—विधायी विभाग के राजभाषा (विधायी) आयोग के सचिव के स्थान पर मंत्रालय को हिंदी सलाहकार समिति के सचिव के रूप में राजभाषा (विधायी) आयोग के पूर्ण कालिक सदस्य डा० मोती बाबू की नियुक्ति के बारे में भारत सरकार, विधि और न्याय मंत्रालय, विधायी विभाग के संकल्प सं० एफ० 4 (1)/70-रा० भा० तारीख 25 जनवरी, 1973 को 18 जून, 1974 में एतद्वारा विखंडित किया जाता है।

**आदेश**

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक एक प्रति सभी राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्र प्रणामनों और भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों को भेज दी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सामान्य जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाये।

एन० श्रीनिवासन,  
उप-सचिव

**वाणिज्य मंत्रालय**

नई दिल्ली, दिनांक 19 जून 1974

**संकल्प**

विषय :—निर्यात उत्पादों हेतु प्रतिपूरक भत्तों का पुनरीक्षण करने के लिए अन्तःमंत्रालय समिति का गठन।

सं० 12(3)/73-ई० ए० सी०—सरकार, लागत निर्धारण और प्राप्त होने वाली कोमतों में संबंधित दीर्घाधि तथा स्थिर प्रवृत्तियों तथा अन्य संगत कारणों पर निर्भर रहते हुए समय समय पर बाजार परिस्थितियों और निर्यात उत्पादों हेतु तकद प्रतिपूरक भत्ते का पुनरीक्षण करने के लिये स्थायी संस्थागत प्रबंध करने की आवश्यकता अनुभव करती रही है। अतः समय समय पर अनुज्ञेय निर्यात उत्पादों हेतु उत्पादन लागतों, जहाज पर मूल्य प्राप्ति, और भाड़ा दरों (जहां कि भाड़ा उपदान दिया जाता है) का पुनरीक्षण करने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति का गठन किया गया है। समिति में निम्नलिखित सम्मिलित होंगे :—

- |   |         |
|---|---------|
| 1. अपर सचिव,<br>वाणिज्य मन्त्रालय       | अध्यक्ष |
| 2. अपर सचिव,<br>व्यय विभाग              | सदस्य   |
| 3. अपर सचिव,<br>आर्थिक कार्य विभाग      | "       |
| 4. मुख्य नियंत्रक, आयात तथा निर्यात     | "       |
| 5. निदेशक (ई० ए०),<br>वाणिज्य मन्त्रालय | "       |

6. विकास अधिकारी (ई० पी० इंजी०) सदस्य

तकनीकी विकास महानिदेशालय

7. विकास अधिकारी (ई० पी० के०) "

**तकनीकी विकास महानिदेशालय**

जैसे ही और जब आवश्यकता होगी अध्यक्ष को तदर्थ आधार पर अन्य संबंधित अधिकारियों की सहयोजित करने की शक्तियां भी होंगी। समिति की बैठक यदि आवश्यक हो, ऐसी बातों को ध्यान में रखते हुए जोकि समय समय पर हुई हों, तकद प्रतिपूरक भत्ते के स्तरों में अपेक्षित संशोधनों यदि कोई हों, पर विचार करने के लिये साधारणतया अथवा प्रायः निमाही में एक बार होगी।

**आवेश**

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये और इसकी प्रतियुक्ति सभी संबद्धों को भेज दी जाय।

आर० तिरुमलाई,  
अपर सचिव

**शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय****(शिक्षा विभाग)**

नई दिल्ली, दिनांक 18 जून 1974

**शुद्धिपत्र****विषय:—उर्दू की उन्नति की समिति।**

सं० एफ० 15-25/72-एल० 1/उर्दू सेल—समसंख्यक शुद्धिपत्र, दिनांक 21 फरवरी, 1973, 6 जुलाई, 1973, 26 सितम्बर, 1973, 3 नवम्बर, 1973, 29 दिसम्बर, 1973 और 2 अप्रैल, 1974 द्वारा संशोधित, संस्कृति विभाग के संकल्प सं० एफ० 15-25/72 एल०-1 दिनांक 5 मई, 1972 में निम्नलिखित और संशोधन किया जाता है :—

**पैरा-7 के स्थान पर निम्नलिखित लिख दिया जाये।**

‘समिति की अपनी रिपोर्ट 31 अगस्त, 1974 तक सरकार को पेश कर देनी चाहिये।

**आदेश**

आदेश दिया जाता है कि संकल्प के संशोधन की प्रतियां समिति के सभी सदस्यों, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, सभी कुलपतियों, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, प्रधान मंत्री सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, आयोजना आयोग, राष्ट्रपति सचिवालय तथा सभी राज्य सरकारों और भारत सरकार के सभी विभागों को भेज दी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प के शुद्धिपत्र को भारत के राजपत्र में, सर्वसाधारण की सूचना के लिये प्रकाशित कर दिया जाये।

ए० के० चतुर्वेदी,  
उप-सचिव

## रेल मंत्रालय

## (रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक 5 जून 1974

सं० 72/डब्ल्यू०4/सी० एन० एल०/एन० ई०/24 पार्ट—  
सार्वजनिक सूचना के लिये एतद् द्वारा अधिमूचित किया जाता है कि रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) ने शाहजहांपुर मोहम्मदी के रामने फर्रुखाबाद से गोला गोकर्नाथ तक एक नयी रेलवे लाइन के निर्माण पर विचार करने के लिये सर्वेक्षण करने की मंजूरी दे दी है। लाइन की लम्बाई लगभग 135 कि० मी० होगी। यह कार्य पूर्वोक्त रेलवे द्वारा किया जायगा और इसे "फर्रुखाबाद-गोला गोकर्नाथ नयी रेलवे लाइन इंजीनियरी एवं यानायात सर्वेक्षण" कहा जायगा।

अमृत लाल गुप्ता,  
सचिव, रेलवे बोर्ड।

## सिंचाई और विद्युत मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 25 फरवरी 1974

## संकल्प

सं० 7/3/73-फ० ब० प०—फर्रुका बराज नियंत्रण बोर्ड के गठन के संबंध में इस मंत्रालय के संकल्प सं० 1/13/67-फ० ब० प० दिनांक 23 जून, 1969 के पैरा 2 में क्रम सं० 4 के बाद निम्नलिखित जोड़ दिया जाय :—

"5. अतिरिक्त सचिव,

सिंचाई और विद्युत मंत्रालय,

भारत सरकार

सदस्य"

वर्तमान क्रमांक 5 से 8 को क्रमशः क्रमांक 6 से 9 तक पढ़ा जाय। इस प्रकार क्रमांक बदले जाने के बाद क्रमांक 9 के बाद निम्नलिखित जोड़ दिया जाय :—

"10. निदेशक (आंतरिक वित्तीय सहायकार)

सिंचाई और विद्युत मंत्रालय

भारत सरकार

सदस्य"

इस संकल्प में वर्तमान क्रमांक 9 को क्रमांक 11 पढ़ा जाय।

## आदेश

आदेश दिया जाता है कि उपर्युक्त संकल्प को राज्य सरकारों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, भारत के नियंत्रण तथा महालेखा परीक्षक, प्रधान मंत्री सचिवालय, राष्ट्रपति के सचिव और योजना आयोग को भेज दिया जाय।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाय तथा इसको राज्य के राजपत्र में सर्व-साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित करने के लिये पश्चिमी बंगाल सरकार से भी अनुरोध किया जाय।

दिनांक मार्च 1974

## संकल्प

सं० 7/3/73-फ० ब० प०—फर्रुका बराज नियंत्रण बोर्ड के गठन के संबंध में समय-समय पर यथा-संगोहित इस मंत्रालय के संकल्प सं० 7/7/61-फ० ब० प० दिनांक 28 अप्रैल, 1961, के पैरा 3 में क्रम सं० 5 के बाद निम्नलिखित जोड़ दिया जाय :

"अतिरिक्त सचिव

सिंचाई और विद्युत मंत्रालय,

भारत सरकार,

सदस्य"

पैरा 3 के वर्तमान क्रमांक 6 से 14 को क्रमांक 7 से 15 तक पढ़ा जाय।

## आदेश

आदेश दिया जाता है कि उपर्युक्त संकल्प को राज्य सरकारों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, भारत के नियंत्रण तथा महालेखा परीक्षक, प्रधान मंत्री सचिवालय, राष्ट्रपति के सचिव और योजना आयोग को भेज दिया जाय।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाय तथा इसको राज्य के राजपत्र में सर्व-साधारण की सूचनार्थ प्रकाशित करने के लिये पश्चिमी बंगाल सरकार से भी अनुरोध किया जाय।

सत्येन्द्र नाथ गुप्ता,

संयुक्त सचिव

## PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1974

No. 85-Pres./74.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL"/"AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Wing Commander DILIP SHANKER JOG (4608), Flying (Pilot)

Wing Commander Dilip Shanker Jog has been in command of a Squadron operating supersonic fighter aircraft for over a year. During this period, a large number of junior pilots were successfully converted on to these aircraft. This was done without an accident and in accordance with prescribed time schedules. He supervised this conversion training and played a leading part in carrying out instructional flights. In addition, he ensured the combat readiness of the Squadron by completing operational training exercises. He has to his

credit 3600 hours of accident-free, single engine flying, 800 sorties of which are on supersonic aircraft.

Throughout, Wing Commander Dilip Shanker Jog displayed professional skill, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

2. Wing Commander GURMOHAN SINGH DHINGRA (4903), Flying (Pilot)

Wing Commander Gurmohan Singh Dhingra has been serving with an operational squadron since January, 1968. During this period, he has displayed extraordinary interest and an exceptionally high sense of duty in the conversion of pilots. He has never spared himself the effort of bringing up the standard of all pilots both in the air and on ground. His keen and continued enthusiasm and exemplary sense of duty have contributed greatly in bringing up the operational status of the squadron. He has a total of 8665 hours of flying to his credit, of which 2800 hours are on instructional

flying and 2250 hours on operational flying. He has an accident free flying career.

Throughout, Wing Commander Gurmohan Singh Dhingra displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

3. Squadron Leader SHREEKANT HARISH-CHANDRA PEDNEKAR (5035),  
Flying (Pilot)

Squadron Leader Shreekant Harishchandra Pednekar has been serving as the Flight Commander of Training Flight at Paratroopers Training School since April, 1970. He has a total of 7525 flying hours, which include 2750 hours of instructional flying, to his credit. He was entrusted with the task of Operational Training of Pilots of certain Squadrons and tactical drops for some Army Battalions. He undertook the task of training with great zeal and enthusiasm and completed it ahead of schedule. During this period, he had to fly by day and night without any proper rest. He has greatly improved the standard of training of new pilots and set an example worthy of emulation by his colleagues and juniors alike.

Throughout, Squadron Leader Shreekant Harishchandra Pednekar displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

4. Squadron Leader DUSHYANT SINGH VSM (5048), Flying (Pilot)

Squadron Leader Dushyant Singh was posted to an operational unit on 1st May, 1972. On the 27th June, 1972, he was appointed Project Co-ordinator of Exercise Storm Exchange, which involved carrying out weather reconnaissance in Indian Sub-Continent in the Royal Air Force Canberra PR 719 on loan to India. In record time he organised personnel attached from various units into a homogenous team and carried out independent operations from a number of airfields without a set pattern of spare parts backing. In this unknown field of weather research he was able to successfully complete all the assigned sorties in collaboration with civilian Scientists, against unpredictable weather conditions, un-serviceability of the aircraft involving one engine change and one inspection and he achieved a task output of 165 hours on a single aircraft in less than three months. He has flown over 2891 accident free hours on Canberra aircraft.

Throughout, Squadron Leader Dushyant Singh displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

5. Squadron Leader JASJIT SINGH, VR. C. (5100)  
Flying (Pilot)

Squadron Leader Jasjit Singh served as a Flight Commander in an operational Squadron in the Eastern Sector in 1961-62. During this tenure, he displayed outstanding Flying ability, a sound grasp of administrative matters and exceptional devotion to duty. Thereafter, he has not only maintained the high standards but has also improved flying and administrative talents. He is a qualified Flying Instructor and had done excellent work both in our own training institution and also during his deputation to a foreign Air Force. He has a Flying record of over 3300 hours of accident-free flying. In addition, he has achieved outstanding results in an operational capacity having carried out operational flying during the Indo-Pak Conflict of 1971, for which he has been awarded Vir Chakra. He successfully graduated from the Defence Staff College. During his stay in the Career Planning Cell at Air Headquarters, he has worked incessantly at the complex problems of Manpower Planning with the Permanent

Manpower Planning Committee, both for officers and airmen. In addition, his direct contribution to the career Planning Papers/Presentation has been commendable. His personal example of diligence, devotion to duty and dedication has been an excellent example to all the staff who worked alongside him in the Personnel Directorate.

Throughout, Squadron Leader Jasjit Singh displayed courage professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

6. Squadron Leader OM PRAKASH SHARMA (5104), Flying (Pilot)

Squadron Leader Om Prakash Sharma is one of the pioneers of supersonic Squadrons of the Indian Air Force. He has done over 1200 accident free sorties on supersonic aircraft. He has been the Flight Commander of four supersonic fighter Squadrons and has been largely responsible in bringing them to their high operational capability in a short time after their conversion to the new type of aircraft. During his tenure as the Senior Operations Officer of a Signal Unit, he was commended by the Air Officer Commanding-in-Chief, Western Air Command, for his organisational capability and hard work. He has greatly helped in developing new operational tactics. During the 1971 operations, he undertook twelve operational missions, including deep penetration, night bombing of enemy airfields, escort and offensive sweep missions. During his present tenure as the flight commander of a newly converted supersonic squadron, he has succeeded in training young pilots to 'fully Operational' status, at the same time fulfilling all tasks allotted to the Squadron. His professional ability in combat flying has been a source of inspiration to all air and ground crew who have served under him.

Throughout, Squadron Leader Om Prakash Sharma has displayed courage, leadership and exceptional devotion to duty in the highest traditions of the Air Force.

7. Squadron Leader RAJESHWAR KUMAR BHALLA (5191), Flying (Pilot)

Squadron Leader Rajeshwar Kumar Bhalla has been serving with the Flying Instructors' School, since, January, 1971. After graduating as a 'Flying Instructor' in 1964, he has been carrying out instructional flying in various capacities and out of his accident-free total of 4636 hours, 2533 hours have been instructional flying. He has taken a keen interest in all the activities of the unit. He officiated as a Flight Commander and utilized his training experience effectively and with diligence, systematic approach and planning completed the courses well in time. He has carried out extensive flying and devised new techniques of flying training.

Throughout, Squadron Leader Rajeshwar Kumar Bhalla displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

8. Squadron Leader MOHINDER KUMAR ANAND (5498)

Administrative/Air Traffic Controller/Parachute Jump Instructor

Squadron Leader Mohinder Kumar Anand qualified as a Parachute Jump Instructor in July, 1959. In imparting parachute jump training, he has been a source of determination, inspiration and courage to his pupils. He has completed over 375 parachute descents. In accumulating data for parachute descents at altitudes from 10 to 15,000 ft, he has played a pioneering role. He has not only shown great courage in initiating the first ever jumps at such altitudes but was also instru-

mental in collecting and compiling data which has proved of immense value in evaluating the various types of parachutes for use at these unexplored altitudes. In undertaking these trials and in obtaining useful data, he has exposed himself to hazardous circumstances disregarding his personal safety. In May, 1968, on his own initiative, he carried out free fall descents for the first time in the country. In December 1971, he carried out free fall descents for the first time from AN-12 aircraft, thus inspiring his subordinates to undertake sky diving. His pioneering spirit and capacity for innovation largely responsible for the testing and final acceptance of a new type of parachute with indigenous modifications which has resulted in the saving of foreign exchange. He is also responsible in proving the suitability and final acceptance of 28 feet diameter parachutes.

Throughout, Squadron Leader Mohinder Kumar Anand displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

9. Squadron Leader SHIV NATH RATHOUR (5580), Flying (Navigator)

Squadron Leader Shiv Nath Rathour has been serving with the Air Headquarters Communication Squadron since February, 1968. He worked as the Navigation Leader of the unit for two years. He holds the highest transport category both on HS 748 and TU 124 aircraft. He has a total of 6035 flying hours to his credit, of which 1915 hours were flown while on the strength of this unit in conveying VIP's. Prior to his posting to this unit, he worked as a local examiner on AN-12 aircraft and did over 1500 hours of operational flying including night dropping sorties in operational area. He has been taking very keen and active part in sports and other extra-curricular activities of the Station and has worked tirelessly for the welfare of the personnel.

Throughout, Squadron Leader Shiv Nath Rathour displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

10. Squadron Leader RABINDAR NATH KHARBANDA (5589) Flying (Pilot)

Squadron Leader Rabindar Nath Kharbanda has been serving with Flying Instructors' School since January, 1971. He has been on instructional flying since January, 1967 and out of a total of 4975 accident-free flying hours to his credit, he has 1740 hours of instructional flying. Most of his instructional flying has been in the basic stage on the HT-2 aircraft. This stage of instructional flying is professionally one of the most difficult and challenging in the career of the instructor. In May 1968, while on an instructional sortie, the propeller of the HT-2 aircraft flew off. With great presence of mind and professional skill he force landed the aircraft on the airfield causing no damage to the aircraft.

Throughout, Squadron Leader Rabindar Nath Kharbanda displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

11. Squadron Leader ASHOK PRATAPRAO SHINDE, Vr. C (5671) Flying (Pilot)

Squadron Leader Ashok Prataprao Shinde has been flying fighter aircraft continuously since 1959. He has flown 2331 hours on jet aircraft, out of which 635 hours are on a supersonic type of aircraft. On the 8th May, 1965, while he was flying a Toofani aircraft, the engine flamed out. He displayed great courage and airmanship in successfully executing a dead stick landing.

He stood first in the Pilot Attack Instructors course. He passed with an excellent grade while undergoing on a supersonic aircraft abroad. Due to his efforts, his Squadron emerged as the best in close Air Support competition held by his Command in 1972.

Throughout, Squadron Leader Ashok Prataprao Shinde displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

12. Squadron Leader KRISHNA BIHARI SINGH, VSM (5865) Flying (Pilot)

Squadron Leader Krishna Bihari Singh has been in command of No. 1 (Delhi) Air Squadron NCC since January, 1971. He was selected as the manager/pilot of DG NCC Gliding team for the first National Gliding Championship held at Kanpur in April-May 1973. All competing pilots had to be holders of Gold 'C' Distance Leg Badge which meant performance of a cross country of 300 kilometres. Squadron Leader Krishna Bihari Singh had no experience in glider cross country flying. He took up the challenge to fulfil this condition so that the DG NCC team could participate in the National Championship. He was provided with an olympia glider which was made airworthy on 20th April, 1973. With barely a week in hand he set about this task in an earnest manner. His attempts at 300 kilometres cross country were unsuccessful on 20th & 21st April due to inclement weather. On the 22nd April, 1973 he was struggling from 1100 hours to gain enough height to set course for Kanpur, a distance of 390 kilometres, but weather conditions were unfavourable. Finally in a daring move he set course from a low height of only 2600 feet and at a very late hour of the day. He was down to a height of 1400 feet over Tilpat Range but managed to continue soaring with skill and determination. After covering a distance of 285 kilometres, he was forced to land short of Kanpur due to poor thermal activity and failing light. He was retrieved to Kanpur the next day by the ground party. After one more unsuccessful attempt, he finally completed a distance of 306 kilometres from Kanpur to Varanasi on the 27th April, 1973 and thus earned a Gold 'C' Distance Badge of the Fédération Aéronautique Internationale for himself and paved the way for the entry of the DG NCC team into the Championship. He is the first in the NCC to earn this distinction. During the Championship he was flying an Olympia glider (1947 manufacture) with a glide ratio of 1:18 against modern high performance sailplanes with glide ratios of 1:28 to 1:36. He was competing against veteranglider pilots of the country with far more experience than him. In spite of these handicaps, he succeeded in securing 4th position amongst 11 participants at the National level.

Squadron Leader Krishna Bihari Singh thus displayed courage, determination, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

13. Squadron Leader ARUN VITHAL KAMAT (6009), Flying (Pilot)

Squadron Leader Arun Vithal Kamat was commissioned in the Indian Air Force in December, 1960. He has flown 1400 hours on operational aircraft. During the Indo-Pak Conflict of 1971, he was employed as a Flight Commander in one of the fighter squadrons, operating from an advance base in the Western Sector. On the 9th December, 1971, he was detailed to lead a section of two aircraft, their target being a Pakistani airfield. This was his 4th operational mission over enemy territory. He commenced the attack in the face of heavy fire from enemy's anti-aircraft guns and light machine guns. His aircraft was badly hit. Finding that it was impossible to control the aircraft, he abandoned

the aircraft. He broke both his legs on impact with the ground.

Squadron Leader Arun Vithal Kamat thus displayed courage, determination and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

14. Flight Lieutenant MANOHAR GOPALDAS MASSAND (7666)  
Flying (Pilot)

Flight Lieutenant Manohar Gopaldas Massand has been posted to a heavy transport squadron since February, 1968. Although he is not a qualified flying instructor, he has very effectively carried out the task of screening and qualifying junior pilots. He has to his credit 4310 flying hours of which 1850 hours have been flown over the difficult and hazardous mountainous terrain of Ladakh and the Eastern Sector. On the 22nd July, 1972, he was detailed to check a junior pilot for one of the dropping zones somewhere in the Ladakh Sector. During the most critical stage of the mission, when the load was actually moving out of the aircraft, one of the engines of his aircraft failed. Flight Lieutenant Massand promptly took over the control of the aircraft and with his superior professional ability and skill, confidently and correctly handled the emergency, and thus avoided a situation which could have resulted in disaster. He completed the supply drop on three engines and later made a safe emergency landing at a forward airfield. During the Indo-Pak Conflict of 1971, he always volunteered for difficult operational missions allotted to the Unit. He took active part in the Battalion group drops carried out in Bangladesh on the 11th and 12th December, 1971. Apart from this, he flew a number of important missions.

Throughout, Flight Lieutenant Manohar Gopaldas Massand displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

15. Flight Lieutenant VISHAN KUMAR SAXENA (8054)

Administrative/Parachute Jump Instructor

Flight Lieutenant Vishan Kumar Saxena has been performing the duties of Parachute Jump Instructor since 1965. During this period he has made nearly 700 live descents, which is second highest amongst the Parachute Jump Instructors. He has also completed the highest number of night descents. He has jumped from seven types of transport aircraft and has taken part in almost all the trial jumps carried out to test new parachutes and airborne equipment. During the operations in December, 1971, he was detailed as a Detachment Commander at an Air Force base for certain forces earmarked for Airborne Operations in the Eastern Sector. With ingenuity, he carried out the task efficiently in spite of many handicaps and flew as a Despatcher in the lead aircraft.

Throughout, Flight Lieutenant Vishan Kumar Saxena has displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

16. Flight Lieutenant BALVINDER JIT SINGH SANDHU (9427)  
Flying (Pilot)

On the 8th February, 1973 Flight Lieutenant Balvinder Jit Singh Sandhu was Captain of a Packet aircraft on a flight from Port Blair to Dum Dum with fifteen passengers and freight on board. At a distance of 600 nautical miles from Dum Dum, over the sea, the pilot experienced a runway propeller on the starboard engine. Though the pilot immediately took all the corrective actions, as laid down, his attempts to feather

the propeller were unsuccessful. Due to the tremendous drag caused by the unfeathered propeller, the aircraft was losing height rapidly. The aircraft was at that time 175 nautical miles from Rangoon, the nearest diversion. Flight Lieutenant Sandhu immediately took stock of the situation and attempted to lighten the aircraft by jettisoning Cargo and other equipment. Despite this the aircraft continued to lose height, and he realised that he could not reach Rangoon. He therefore decided as a last resort, to land the aircraft at Bassein, which has a short unprepared runway. He executed a safe landing without any damage whatsoever to the aircraft. By remaining very cool in this grave emergency, Flight Lieutenant Sandhu was able to take prompt and correct decisions in handling the situation, which otherwise could have assumed fatal proportions. By his example and leadership, he inspired confidence in the crew and passengers.

Throughout, Flight Lieutenant Balvinder Jit Singh Sandhu displayed courage, determination and professional skill in keeping with the highest traditions of the Indian Air Force.

17. Flight Lieutenant TEJINDER SINGH (9535)  
Flying (Pilot)

Flight Lieutenant Tejinder Singh has been serving with a Helicopter Unit since 29th September, 1969. Out of a total of 2375 flying hours, he has flown 1500 operational hours. In August 1967 while landing at a forward helipad in Mizoram, one of the rotor blades of his aircraft flew off, cutting the tail rotor in the process. In this accident he was injured and placed in a lower medical category. Undaunted by this accident, one year later when he became medically fit, he resumed flying with full vigour and always set a good personal example. During Indo-Pak Conflict 1971, he flew a number of operational sorties by day and night in the Western Sector, and later his unit was engaged in the Air Maintenance task for forward troops. Flight Lieutenant Tejinder Singh was the detachment Commander. By his personal hard work and example the detachment succeeded in air-lifting maximum tonnage in the available time before bad weather set in. On the 21st February, 1973, there was an emergency message in the afternoon, for the evacuation of a very serious casualty from a forward base. The timing was such that dark night flying had to be carried out to save the casualty. For this task, Flight Lieutenant Tejinder Singh was detailed. He successfully carried out the evacuation and saved a precious life.

Throughout, Flight Lieutenant Tejinder Singh has displayed courage, determination, professional skill and leadership in the highest traditions of the Air Force.

18. Flight Lieutenant BRIJ MOHAN MALIK (9874), Flying (Navigator)

Flight Lieutenant Brij Mohan Malik joined a Bomber Squadron and had logged over 700 hours. His navigational skill and bombing performance has been of an exceptional standard. Although young in service, he has always volunteered to shoulder heavy responsibilities and cheerfully undertaken all types of tasks, both in flying and on the ground. During the Indo-Pak Conflict of 1971 he undertook five missions which he accomplished most successfully with precision navigation and accurate bombing. He was selected to fly for project "Storm Exchange" which involved difficult and skilful flying all over India in monsoon conditions. During this tour he displayed exceptional confidence and ability in flying.

Throughout, Flight Lieutenant Brij Mohan Malik displayed navigational ability, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

19. Flight Lieutenant PRAKASH BALWANTRAO JADHAV (10149)  
Flying (Pilot)

Flight Lieutenant Prakash Balwantrao Jadhav has been serving with an Operational Squadron for the last seven years. So early in his career, he has amassed over 3900 hours of flying, out of which over 2600 hours have been flown on operational sorties in the Eastern and Western Sectors. He has flown 1174 dropping sorties and 106 landing sorties at advanced landing grounds. His accident free operational flying is a proud record—both in hours and number of sorties. He also took part in paratrooping in the Eastern Sector during the operations in December 1971.

Throughout, Flight Lieutenant Prakash Balwantrao Jadhav displayed professional skill, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

20. Flight Lieutenant NOEL THOMAS LOBO (10574), Flying (Pilot)

Flight Lieutenant Noel Thomas Lobo has been serving with an operational Squadron since June, 1970. During the period of three years, he has flown a total of 2167 hours, out of which 1325 hours have been flown on Operational missions. He has also carried out 100 landings at advanced landing grounds. On the 13th March, 1973, he was on a air dropping mission deep inside the hills. Over the dropping Zone, while he was on his second circuit, the starboard engine of his aircraft started surging. He abandoned further drops and started climbing to clear the hills to come out safely. On reaching height of 6000 ft, the engine started emitting smoke and heavy oil leak was observed. He immediately feathered the affected engine. On opening power, the port engine also started vibrating, and the aircraft started losing height. Faced with a critical emergency, he ordered the ejection of part of the load and brought the crippled aircraft safely to base executing a single engine landing. He handled the emergency with commendable skill and his timely action saved the precious lives of crew members the aircraft from further damage and other Government property.

Flight Lieutenant Noel Thomas Lobo thus displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

21. Flying Officer BALDEV SINGH (10991)  
Flying (Pilot)

Flying Officer Baldev Singh has been a Dakota pilot since June, 1967. He has a total of 2200 hours of which 1200 hours have been flown on operational sorties over hazardous terrain in the Eastern Sector. His flying has been accident free throughout and he has obtained a high operational status. On the 10th September, 1972, he was detailed to carry out an Air Maintenance sortie. While joining circuit at the Dropping Zone, he experienced severe vibrations and smoke from the port engine. He decided to abort the sortie. The vibration further increased forcing him to feather the engine. Despite his best and repeated efforts the engine failed to feather and the aircraft started losing height very rapidly bringing him below the safe height in the hills. He took correct and timely decision and ordered the load to be ejected so as to maintain minimum height for clearing the hills through the escape route, but the aircraft still did not maintain height. The live engine temperatures started increasing rapidly and because the malfunctioning engine was windmilling, he restarted the engine maintaining partial power to counteract the drag of the windmilling propeller. After ejecting 57 bags of load aircraft maintained a slower rate of descent.

After flying the crippled aircraft for one hour, under adverse conditions of weather he executed a safe landing at Base.

Flight Lieutenant Baldev Singh thus displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

22. 17140 Master Warrant Officer PRAN KRISHNA GHOSE,  
Ground Training Instructor/Parachute Jump Instructor

Master Warrant Officer Pran Krishna Ghose has the unique distinction of being the first Indian Parachute Jump Instructor who was trained at Chaklala in 1946. Being the seniormost Parachute Jump Instructor in the Indian Air Force, he was entrusted with the job of organising and conducting paratrooping training in India after Independence. It was due to his initiative, hard work, ingenuity and devotion to duty that the training of Army paratroopers started at Agra within a short period. As a Parachute Jump Instructor, Master Warrant Officer Ghose has carried out 430 descents. He has always volunteered for the most difficult assignments and has carried out para descents at high altitude, over sea and desert. He has created a record by jumping from eight different types of aircraft. He has always been associated with all the trials of new parachutes and airborne equipment. Though he is over fifty-one years of age he is still an active parachute Jump Instructor. His knowledge and keenness on parachuting is an example worthy of emulation both by seniors and juniors. His hard work, professional skill and devotion to duty have not only been a source of inspiration for the Parachute Jump Instructors under him but also for Army paratroopers.

Throughout, Master Warrant Officer Pran Krishna Ghose displayed courage, professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

23. 24197 Master Warrant Officer CHERUKAT VENU GOPAL KURUP  
Flight Gunner/Fitter Armourer

Master Warrant Officer Cherukat Venu Gopal Kurup has been operating as a Flight Gunner with a transport squadron in J&K area since 1963. He has flown 3675 hours inclusive of 1280 hours of operational flying on supply dropping and transport operations. He is a keen airman whose exemplary conduct and high professional competence have been a source of inspiration to his colleagues. During the operations in December, 1971, despite a critical shortage of Gunners, Master Warrant Officer Kurup supervised the preparation of the aircraft for the bombing missions himself and then readily volunteered for operational missions.

Throughout, Master Warrant Officer Cherukat Venu Gopal Kurup displayed professional skill and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

24. 36229 Master Warrant Officer ARUN KUMAR CHOUDHURY, Signaller (Air)

Master Warrant Officer Arun Kumar Choudhury was enrolled in the Indian Air Force in 1943 and since 1950 he has been an effective aircrew. He has to his credit more than 6000 hours of flying and out of which over 2000 hours are on operational flying. He is also a qualified 2nd Pilot on Dakota aircraft and his services were extensively made use of during the 1962 operations. During November and December, 1962, he had flown many day and night operational missions, over the battle areas and had done 224 hours of operational flying. He had also taken part in the GoA Operations



and he was a member of the crew of the aircraft that landed first at DIU (GOA). He was commended by the Chief of the Air Staff in 1964, for his exceptional devotion to duty. By his excellent organising ability, high degree of professional knowledge and exceptional devotion to duty, Master Warrant Officer Choudhury has carried out his task relentlessly; and it is largely due to his intelligent and dedicated work that his unit had achieved 100% categorisation amongst the Signallers.

Throughout, Master Warrant Officer Arun Kumar Choudhury displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

25. 40702 Warrant Officer BIDHU BHUSHAN DASS, Flight Gunner

Warrant Officer Bidhu Bhushan Dass has been serving in a heavy transport Squadron since May, 1966. He is one of the pioneer Flight Gunners, who had volunteered for flight gunnery and has been flying as Flight Gunner for the last twenty years. He has flown 6100 hours out of which over 2000 hours were flown on Maritime Operations and 1450 hours consist of operational flying in the Western and Eastern Sectors. He has been a great asset to his unit in training newly posted flight gunners. In performing his duties as loadmaster as well as flight gunner, he has displayed a high standard of professional ability and sense of duty and has been a source of inspiration to his colleagues. During the operations against Pakistan in 1971, he voluntarily undertook to fly in operational drop sorties over the enemy territory.

Throughout, Warrant Officer Bidhu Bhushan Dass has displayed courage, determination and devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

26. 223794 Flight Sergeant SURJIT SINGH  
Ground Training Instructor/Parachute Jump Instructor

Flight Sergeant Surjit Singh qualified as a Parachute Jump Instructor in 1963. He was the first Senior Non-Commissioned Officer to complete 500 Para descents including 100 night descents, within a short period of nine years. He further undertook live-jump trials of indigenous and indigenously modified parachutes. In December, 1968, he became the first Senior Non-Commissioned Officer to do free-fall parachuting in the country. In 1969, while accompanying a team to carry out high altitude descents at a Dropping Zone located at 15,200 ft, he proved to be a great asset in completing the trials by carrying out live jumps in spite of the hazards, such as very high rate of descent, rarified atmosphere, extreme cold and hard rocky surface. Having carried out the jumps in complete disregard to his personal safety, he volunteered for the difficult and arduous task of despatching and performing the duties of Drop Zone Safety Officer.

Flight Sergeant Surjit Singh thus displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

27. 233677 Sergeant PUTHIYAPARAMBATH VIJAYAN, Flight Engineer

Sergeant Puthiyaparambath Vijayan has been serving with an operational Squadron as a Flight Engineer since January, 1970. He has to his credit 686 flying hours. His capacity for intelligent analysis of aircraft defects is excellent. He has always evinced keen interest in flying and has discharged his duties with unflagging zeal and enthusiasm. He has faced many a grave situation in the air calmly and with confidence. Four times during his stay in the Squadron, his aircraft developed engine trouble in flight. On all these occasions his time-

ly detection of faults and sound advice to the pilots on remedial measures helped in landing the aircraft safely.

Throughout, Sergeant Puthiyaparambath Vijayan displayed professional skill, exceptional devotion to duty in the best traditions of the Air Force.

28. 269320 Corporal SAYEED AHMAD KHAN  
Fitter II Airframe

On the 22nd October, 1972, an aircraft of an operational Squadron was arranged for a bombing sortie in the Western Command Armament Meet. At the take-off point, while checking the aircraft he discovered a slight defect in the rudder control cable in the nose under carriage bay. His high degree of technical knowledge of the aircraft and its controls led him to conclude that, since there was no tension in the cable, the cable might have snapped somewhere. Immediately, he realised the gravity of the situation and took the decision not to allow the aircraft to continue with the sortie and sent it back for investigation. Subsequent inspection of the aircraft revealed that the rudder control cable had snapped and had rendered the rudder inoperative. Since differential braking is available without this cable, the pilot would not have realised the rudder failure till the aircraft attained flying speed.

The timely action taken by Corporal Sayeed Ahmad Khan prevented a possible major aircraft accident. By this outstanding act, he has displayed exceptional professional skill and devotion to duty to the best traditions of the Air Force.

No. 86-Pres/74.—The President is pleased to approve the award of the Bar to "Vayu Sena Medal"/"Air Force Medal" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Wing Commander PIRTHI SINGH, VM (4480)  
Flying (Pilot)

Wing Commander Pirthi Singh was commissioned as a Pilot in the Flying Branch of the Indian Air Force in April, 1953. He has been on deputation to Hindustan Aeronautics Limited, Bangalore Division since 7th December, 1970 as a test pilot. During this tenure, he has done 669 hours of test flying consisting of prototype and production testing. He has been actively associated with development work on the HF-24 Trainer, Kiran aircraft and larger external fuel tank tests on the Gnat aircraft. He has displayed a high degree of skill and intelligence during the conduct of this very exacting and difficult task. He has also been associated with prototype trials of Boosters for an operations type of aircraft and he successfully carried out the first flight with this device.

Throughout, Wing Commander Pirthi Singh has displayed courage, professional skill and exceptional devotion to duty.

2. Wing Commander PADMANABHA ASHOKA,  
VM (4653), Flying (Pilot)

Wing Commander Padmanabha Ashoka was commissioned as a Pilot in the Flying Branch of the Indian Air Force in January 1954. His services were loaned to Hindustan Aeronautics Limited in August, 1968. As the Chief Test Pilot of Kanpur Division of Hindustan Aeronautics Limited, he carried out all test flying connected with the HS-748 freighter aircraft right from the clearance of prototype to the completion of freighter trials. This involved 40 sorties averaging at 35 to 40 minutes duration each besides 5 hours of initial clearance flying. Without any past flying experience in paratrooping or supply dropping missions, he carried out flying with an extremely high standard of accuracy and com-

pleted the task ahead of schedule. During the trials, he also developed flying technique for paratrooping and supply dropping which produced excellent results. He carried out the proto type testing with doors open on both sides for the first time on HS-748 aircraft. Automatic aerial delivery system required flying the aircraft at a nose up altitude for automatic ejection of loads. He carefully analysed the flying requirement and developed a flying technique which produced excellent results in supply dropping exercises.

Throughout, Wing Commander Padmanabha Ashoka displayed courage, professional skill and exceptional devotion to duty.

3. Wing Commander BRIJESH DHAR JAYAL, VM (4972), Flying (Pilot)

Wing Commander Brijesh Dhar Jayal was commissioned as a Pilot in the Flying Branch of the Indian Air Force in October, 1955. He has been on deputation to Hindustan Aeronautics Limited Nasik Division, from the 15th January, 1969 to the 19th April, 1972 and to Bangalore Division from the 20th April, 1972 onwards. Throughout his tenure at Nasik Division, he had exhibited great competence and quality in test flying of MIG 21 aircraft. A total of 606 sorties comprising 424.25 hours of test flying on MIG 21 aircraft was carried out by him which also includes testing of aircraft entirely manufactured in India. During his tenure at Bangalore, he has shown great skill and determination in flight testing of different types of aircraft and has carried out 465.15 hours. He has been associated with the critical phase of development testing including jettisoning of external fuel tanks for Kiran and Gnat aircraft during which he has displayed keen aptitude and high degree of skill. His meticulous planning and very good execution enabled the Sea level trials on the prototype Agricultural aircraft to be completed successfully within a very short time.

Throughout, Wing Commander Brijesh Dhar Jayal displayed courage, professional skill and devotion to duty.

A. MITRA  
Secretary to the President

## MINISTRY OF LAW, JUSTICE & COMPANY AFFAIRS

### LEGISLATIVE DEPARTMENT

New Delhi, the 18th June 1974

#### RESOLUTION

F. No. 4(1)(2)/74-O.L.—The Resolution of the Government of India, Ministry of Law and Justice, Legislative Department, No. F.4(1)/70-O.L., dated the 25th January 1973, regarding the appointment of Dr. Moti Babu, then full-time Member, Official Language (Legislative) Commission, as Secretary of the Hindi Advisory Committee of the Ministry in place of the Secretary, Official Language (Legislative) Commission, Legislative Department, is hereby rescinded with effect from 18th June 1974.

#### ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments, Union territory Administrations and Ministries/Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

N. SRINIVASAN, Dy. Secy.

## MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 19th June 1974

#### RESOLUTION

SUBJECT : Constitution of Inter-Ministerial Committee to review compensatory allowances for export products.

No. 12(3)/73-EAC.—Government have been feeling the necessity to have a Standing institutional arrangement to review the conditions of market for exports, and cash compensatory allowance for the export products from time to time, depending on long term and stable trends in costing and prices realised and other relevant factors. It has been decided, therefore, to constitute an Inter-Ministerial Committee to review costs of production, f.o.b. realisation, and freight rates (where freight subsidy is afforded), for the export products admissible from time to time. The Committee will consist of the following :—

#### Chairman

1. Additional Secretary,  
Ministry of Commerce.

#### Members

2. Additional Secretary,  
Department of expenditure.
3. Additional Secretary,  
Department of Economic Affairs.
4. Chief Controller of Imports & Exports.
5. Director (EA),  
Ministry of Commerce.
6. Development Officer (EP Engg),  
Directorate General of Technical Development.
7. Development Officer,  
(E.P. Chem), Directorate General of Technical Development.

The Chairman will also have the powers to co-opt other concerned officers *ad hoc* as and when any necessity may arise. The Committee would meet once a quarter ordinarily or oftener, if necessary to consider modifications, if any, required in the levels of cash compensatory allowance taking into account the developments that might have taken place from time to time.

#### ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India and a copy thereof communicated to all concerned.

R. TIRUMALAI, Addl. Secy.

## MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE

### (DEPARTMENT OF EDUCATION)

New Delhi, the 18th June 1974

#### CORRIGENDUM

SUBJECT : *Committee for Promotion of Urdu.*

No. F. 15-25/72-L.I/Urdu Cell.—The Resolution No. F. 15-25/72 L.I dated 5th May, 1972 of the Department of Culture as amended *vide* Corrigenda of even number dated 21st February, 1973, 6th July, 1973, 26th September, 1973, 3rd November, 1973, 29th December,

1973 and 2nd April 1974, is further amended as under :—

Para 7

*Substitute by the following :*

The Committee should submit its report to the Government by 31st August, 1974.

#### ORDER

ORDERED that copies of the Corrigendum to the Resolution be communicated to all members of the Committee, Chairman, University Grants Commission. All Vice-Chancellor Director, Central Hindi Directorate, Prime Minister's Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Planning Commission, President's Secretariat and all State Governments, Ministries and Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Corrigendum to the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. K. CHATURVEDI, Dy. Secy.

#### MINISTRY OF RAILWAYS

(RAILWAY BOARD)

New Delhi, the 5th June 1974

No. 72/W4/CNL/NE/24.—It is hereby notified for general information that the Ministry of Railways (Railway Board) have sanctioned a survey to consider construction of a new railway line from Farukhabad to Golagokarnath via Shahjahanpur Mohammadi. The length of the line will be about 135 kms. This work will be done by the North Eastern Railway and will be known as the "Farukhabad—Gola Gokarnath New Railway Line Engineering-cum-Traffic Surveys".

A. L. GUPTA, Secy. Rly. Board

#### MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

New Delhi, the 25th February 1974

#### RESOLUTION

No. 7/3/73-FBP.—In paragraph 2 of the Ministry of Irrigation and Power Resolution No. 1(13)/67-FBP, dated the 23rd June, 1969, regarding the constitution of the Standing Committee of the Farakka Barrage Control Board, the following may be inserted after Serial No. 4 :—

"5. Additional Secretary,  
Ministry of Irrigation and Power,  
Government of India . . . Member".

The existing serial numbers 5 to 8 may be renumbered respectively as serial numbers 6 to 9. After the so renumbered serial No. 9, the following may be asserted :—

"10. Director (IFA),  
Ministry of Irrigation and Power,  
Government of India . . . Member".

The existing serial number 9 therein may be renumbered as serial No. 11.

#### ORDER

ORDERED that the above Resolution be communicated to the Government of West Bengal, the Ministries of the Government of India, the Comptroller and Auditor General of India, the Prime Minister's Secretariat, the Secretary to the President and the Planning Commission.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India and the Government of West Bengal be requested to publish the same in the State Gazette for general information.

#### RESOLUTION

No. 7/3/73-FBP.—In paragraph 3 of the Ministry of Irrigation and Power Resolution No. 7/7/61-FBP, dated 28th April, 1961, as amended from time to time regarding the constitution of the Farakka Barrage Control Board, the following may be inserted after Serial No. 5 :—

"6. Additional Secretary,  
Ministry of Irrigation and Power,  
Government of India . . . Member".

In paragraph 3, the existing serial numbers 6 to 14 may be renumbered as serial numbers 7 to 15.

#### ORDER

ORDERED that the above Resolution be communicated to State Governments, the Ministries of the Government of India, the Comptroller and Auditor General of India, the Prime Minister's Secretariat, the Secretary to the President and the Planning Commission.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India and the Government of West Bengal be requested to publish the same in the State Gazette for general information.

S. N. GUPTA, Jt. Secy.

